श्री.

श्रीरघुनाथोजयति

खड्गाभ्यासः

सोर्ड एक्सरसाइज़

अर्थात् तलवार की कवाइद

स्वस्तिश्रीमन्महाराजाधिराजजम्बूकाश्मीराद्यने-
कदेशाधिपतिप्रभुवरश्रीयुतश्री ५ महाराजासा-
हबबहादुर जी की आज्ञानुसार

द्वारकानाथोपाध्यायने युद्ध संबंधी संपूर्ण
लोगों के उपकार के लिये सरल हिंदी भा-
षामें अनुवाद किया

जंबू

विद्याविलासनामकयंत्रालयमें बकशीह
लछमनजीके अधिकारमें मुद्रित भया
संवत् १९१९ फाल्गुण प्रविष्ट २५ शुभम्

अभ्यासस्थल पर चांदमारी के उपयोग के प्रकार का निर्देशन
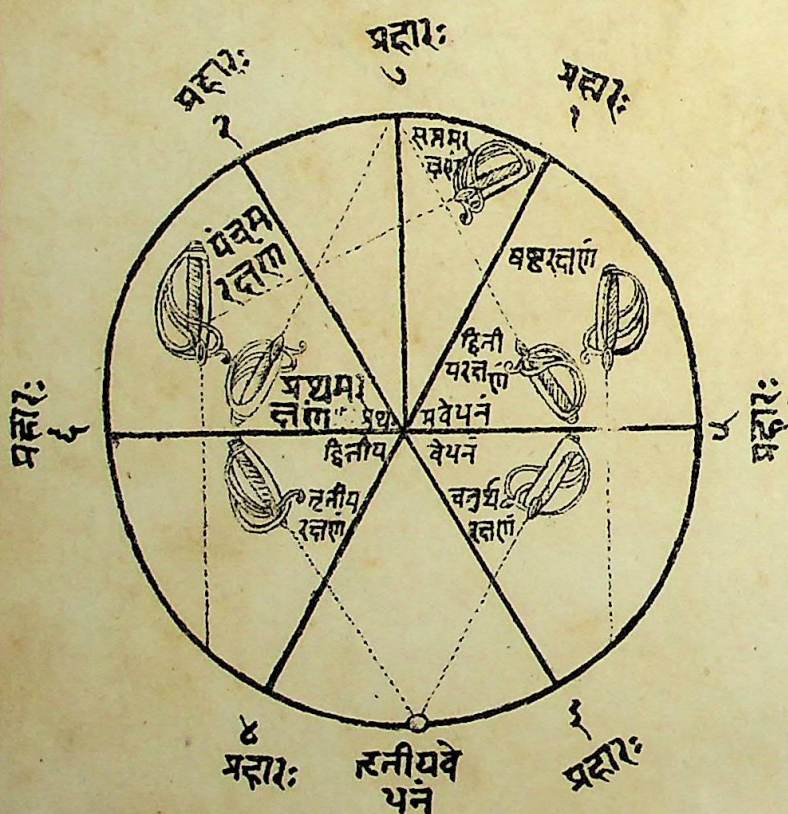
चित्रके खचितन रेखाओं से तत्कालीन क्रिया जानी जाती है
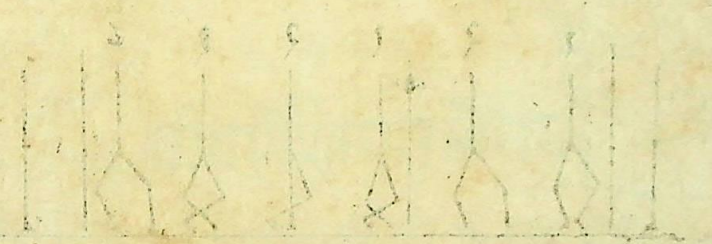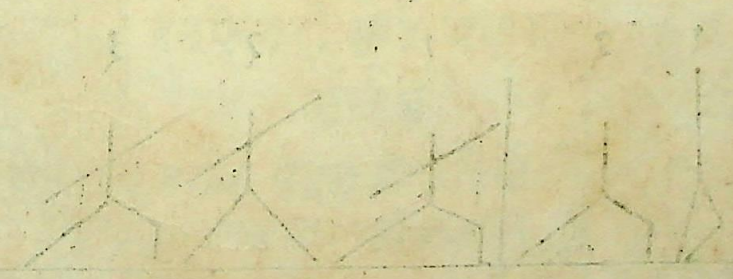
ग्रन्थ के प्राथमिक अभ्यासों के चित्र ॥
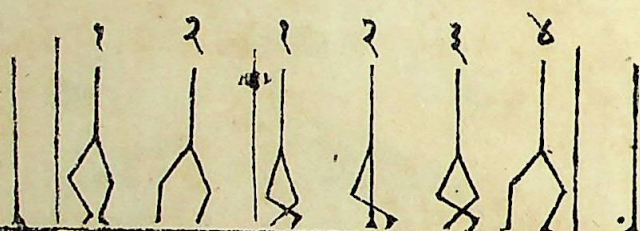
पहिली स्थिति: | दोक्रियासे द्वितीयस्थिति: | तोलन क्रिया | पहिली स्थिति:

दोक्रियासे तृतीय स्थिति: | द्वितीय व्यायाम क्रिया

श्री
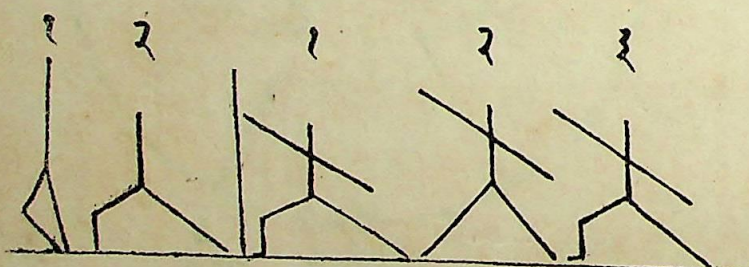
श्रीगणेशायनमोनमः

पदाति सैन्य संबंधी खड्गाभ्यासः

इन्फेन्ट्री सोर्ड एक्सर्साईज़

अर्थात् पैदल सिपाहियों की तलवार की कवाइद

प्राथमिक वर्णन के विषय में

रवेड़ संबंधी मनुष्यों के तैयार करने के वास्ते यथोलिखित शिक्षा अत्यंत निश्चित और शीघ्र तम उपाय है और शिक्षक को यह बात स्पष्ट रूप से समझना चाहिये कि जब नूतन भट रवेड़ के साथ अथवा रवेड़ के बिना अपने सिद्ध वारकी और शिक्षा के अभ्यास में पूर्ण हो जावें तब उन को प्रत्युत्यं प्रतिपाद्य यथार्थ क्रमका स्मरण रखना कुछ आवश्यक नहीं और जिसस्थलमें प्रत्येक **प्रहार कट वेथन** पाइन्ट और **प्ररक्षण पेरी** दिखलाये जाते हैं उस जगह यदि **परीक्षाभ्यास** रिव्यूपकसर्साईज़ अर्थात् अलामा की कवाइद में अच्छी तरह निपुण होवें तो उन का पुनः कथन भी अनावश्यक है और रवेड़ संबंधी पुरुष को प्रत्येक में ऐसा अभ्यस्त होना चाहिये कि जिस में भिन्न २ प्रत्येक को और शिक्षक की इच्छा के अनुसार मिश्रित रूप से भी करने के योग्य होवें ॥ ॥ ॥

१-पहिला प्रकरण

व्यायामक्रिया और स्थितियों के वर्णन के विषय में

इन क्रिया ओं के द्वारा छाती फैलती है सिर उठता है कंधे पीछे की ओर होते हैं और पृष्ठ की मांस पेशियां प्रबल होती हैं ॥ ॥ ॥

जब **गुल्म स्क्वाड सावधानाः** अटेन्शन् पर रहता हैं तब यथोलिखित सूचना दी जाती है ॥

प्रथम व्यायाम क्रिया ॥

फर्सट एकस् टेन्शन् मोशन् ॥

अर्थात् पहिली व्यायाम क्रिया करो

एकम् वन् एक

एकम् वन् अर्थात् एक की आज्ञा पर हस्त बाहु और कंधों को सामने लाओ अंगुलियां मृदुरूप से अग्रभाग में मिली रहें नख नीचे की ओर रहें इस के बाद उन बाहुओं को मण्डल रूप से सिर के ऊपर अच्छी तरह उठाओ और अंगुलियों के अन्त तब भी मिले रहें अंगुठे पीछे की ओर रहें केहुनियां पीछे की ओर दबी रहें कंधे नीचे को रहें॥

द्वे टू दो

द्वे-टू- अर्थात् दो की आज्ञा पर बाहुओं और अंगुलियों को झटका के द्वारा ऊपर की ओर पृथक् करके तिर्यग् रूप से उन को नीचे तब तक दबाओ कि जब तक वे विस्तृत रूप से कंधों के बराबर पंक्ति में न होवें और तिस के बाद उस जगह से उन को क्रमशः उन के स्वाभाविक स्थिति

सावधानः अटेन्शन् पर लाओ छाती और गले को संभवानुसार ऊपर रखने के वास्ते प्रयत्न करो॥

त्रीणि थ्री तीन

त्रीणि-थ्री- अर्थात् तीन की आज्ञा पर हाथों की हथेलियों को सामने फेरो और बाहुओं के विस्तार द्वारा अंगुठों को पीछे दबाओ और तद उन को पीछे की ओर तब तक उठाओ कि जब तक वे सिर के ऊपर न मिल जावें अंगुलियां ऊपर की ओर रहें अंगुठे गठे हुये जिन में बायां सामने को रहे॥

चत्वारि फोर अर्थात् चार की आज्ञा पर बाहु

प्राथमिक वर्णन के विषय में

खड्ग संबंधी मनुष्यों के तैयार करने के वास्ते यथोलिखित शिक्षा अत्यंत निश्चित और शीघ्रतम उपाय है और शिक्षकों को यह बात स्पष्ट रूप से समझना चाहिये कि जब नूतन भट खड्ग के साथ अथवा खड्ग के बिना अपने सिद्ध वारके और शिक्षा के अभ्यास में पूर्ण हो जावें तब उन को पत्र दृश्य प्रतिपाद्य यथार्थ क्रमका स्मरण रखना कुछ आवश्यक नहीं और जिसस्थलमें प्रत्येक **प्रहार कट** **वेधन** पाइन्ट और **प्ररक्षण** **पेरी** दिखलाये जाते हैं उस जगह यदि **परीक्षाभ्यास** रिव्यूपकसर्साईज़ अर्थात् असलीमा की कवाइद में अच्छी तरह निपुण होवें तो उन का पुनः कथन भी अनावश्यक है और खड्ग संबंधी पुरुष को प्रत्येक में ऐसा अभ्यस्त होना चाहिये कि जिस में भिन्न २ प्रत्येक को और शिक्षक की इच्छा के अनुसार मिश्रित रूप से भी करने के योग्य होवें ॥ ॥ ॥

१-पहिला प्रकरण

व्यायामक्रिया और स्थितियों के वर्णन के विषय में

इन क्रिया ओं के द्वारा छाती फैलती है सिर उठता है कंधे पीछे की ओर होते हैं और पृष्ठ की मांस पेशियां प्रबल होती हैं ॥ ॥ ॥

जब **गुल्म** **स्वाड** **सावधानाः** अटेन्शन् पर रहता हैं तब यथोलिखित सूचना दी जाती है ॥

प्रथम व्यायाम क्रिया ॥

फर्सट एक्स् टेन्शन् मोशन् ॥

अर्थात् पहिली व्यायाम क्रिया करो

एकम् वन् एक	एकम् वन् अर्थात् एक की आज्ञा पर हस्त बाहु और कंधों को सामने लाओ अंगुलियां मुड़ेहुए से अग्रभाग में मिली रहें नख नीचे की ओर रहें इस के बाद उन बाहुओं को मण्डल रूप से सिरके ऊपर अच्छी तरह उठाओ और अंगुलियों के प्रान्त तब भी मिले रहें अंगुठे पीछे की ओर रहें के हुनियां पीछे की ओर दबी रहें कंधे नीचे को रहें॥
द्वे टू दो	द्वे—टू—अर्थात् दो की आज्ञा पर बाहुओं और अंगुलियों को फटका के द्वारा ऊपर की ओर पृथक् करके तिर्यग् रूप से उन को नीचे तब तक दबाओ कि जब तक वे विस्तृत रूप से कंधों के बराबर पंक्ति में न होवें और तिस के बाद उस जगह से उन को क्रमशः उन के प्राथमिक स्थिति॥ सावधानः अटेन्शन् पर लाओ छाती औ गले को संभवानुसार ऊपर रखने के वास्ते प्रयत्न करो॥
त्रीणि थ्री तीन	त्रीणि—थ्री—अर्थात् तीन की आज्ञा पर हाथोंकी हथेलियों को सामने फेरो और बाहुओं के विस्तार द्वारा अंगुठों को पीछे दबाओ और तद उन की पीछे की ओर तब तक उठाओ कि जब तक वे सिर के ऊपर न मिल जावें अंगुलियां ऊपर की ओर रहें अंगुठे गठे हुये तिन में बायां सामने को रहें॥

चत्वारि फोर अर्थात् चारकी आज्ञा पर बाहु

चत्वारि फोर चार	ओं और घुटनों को सीधे रख के नीचे की ओर त ब तक झुको कि जब तक हस्तों के द्वारा पाद न छू जावें और सिरको भी उसी दिशा में लाओ तिस के बाद बाहुओं को सामने की ओर उठा के तृती क्रिया थर्ड मोशन् ग्रहण करो ॥
पंच फ़ाइव पांच	पंच- फ़ाइव अर्थात् पांच की आज्ञा पर द्वि तीयक्रिया सेकन्ड मोशन् के अनुसार सावधानाः अटेन्शन्कीस्थिति ग्रहण करो ॥

ये संपूर्ण क्रिया धीरे २ करनी चाहिये कि जिसमें मांश पेशियों भर में आयास पहुंचे द्वितीय और तृतीय क्रियाक भी २ सिरको संभवानुसार दहिनी अथवा बाईं ओर फेर कर के भी करनी चाहिये ये संपूर्ण क्रिया बिना विराम और भिन्न २ आज्ञावाक्यों के भी करना उचित है कि जिसमें परस्पर सहायता मिले और कभी २ पृथक् २ रूप से भी करनी चाहिये ॥

क्रिया त्रयेण प्रथम स्थितिः

फर्स्ट पोजिशन् इन् थ्री मोशन्स्

अर्थात् तीन क्रिया के द्वारा प्रथम स्थिति ग्रहण करो

एकं वन् एक	एकम् वन् अर्थात् एक की आज्ञा पर दोनो हाथों को झट पट पिछाड़ी लेजाओ वाम हस्त से दहिने बांह की केहुनी के ऊपर पकड़ो और दहिने हाथ से बायें की केहुनी के नीचे थाहो ॥

हे टू दो — हे टू अर्थात् दो की आज्ञा पर पड़ियों के द्वारा घूम के बायें को आधा अर्थात् अर्द्धमुख हाफ फेस हो जाओ कि जिस में बांई पड़ी की पीठ दहिनी पड़ी के भीतर लगे सिर सामने की ओर अपनी ही स्थिति को ग्रहण किये रहे ॥

थ्रीण थ्री तीन — थ्रीण थ्री अर्थात् तीन की आज्ञा पर दहिनी पड़ी को बांई पड़ी के सामने लाओ पाद सम-कोण रूप से होवें दक्षिण पाद सामने को होवे और शरीर का बोझ बांई टङरी पर रहै ॥

क्रिया द्वयेन द्वितीय स्थितिः

सेकन्ड पोजिशन् इन् टू मोशन्स्

अर्थात् दो क्रिया के द्वारा द्वितीय स्थिति ग्रहण करो

पकम वन् एक — पकम वन् अर्थात् एक की आज्ञा पर घुटनों को क्रमशः झुकाओ परंतु जहां तक हो सके वहां तक उन को जुदा २ रक्खो पड़ियां न उठने पावें अथवा शरीर की कड़ी स्थिति न परिवर्तित होने पावे ॥

हे-टू दो — हे टू अर्थात् दो की आज्ञा पर दक्षिण पाद से बांई पड़ी के बराबर फट पट अठारह इंच के लगभग का कदम लो शरीर का बोझ बाईं टङरी पर रहे दहिना घुटना ढीला और नमनीय रहे ॥

तोलन क्रिया

बालन्स् मोशन्स्

अर्थात् पाद तोलने की क्रिया करो

एकम् वन् एक — **एकम्** वन् अर्थात् एक की आज्ञापर दहिण पाद को आठ इंच के लग भग बाईं एड़ी के पीछे लेजाओ अंगुठा धीरे से भूमि को छुवे रहे एड़ी खड़ी रहे घुटने अच्छी तरह जुदे २ रहें॥

द्वे टू - दो — **द्वे** टू अर्थात् दो की आज्ञा परबाईं टङरी के विस्तार द्वारा शरीर को क्रमशः उठाओ॥

त्रीणि थ्री तीन — **त्रीणि** थ्री अर्थात् तीन की आज्ञा पर बायें घुटने को झुका के **द्वितीय क्रिया** सेकंड मोशन्स् के एवं स्थिति को ग्रहण करो॥

चत्वारि फोर चार — **चत्वारि** फोर अर्थात् चारकी आज्ञा पर दहिनी टङरी को आगे बढ़ाओ और पैर को धीरे से पट को इस के बाद उस द्वितीय स्थिति सेकन्ड् पोजिशन् को ग्रहण करो कि जिस से **तोलन क्रिया** बालन्स् मोशन्स् प्रारंभ हुई थी॥

प्रथम स्थितिः फर्स्ट पोजिशन् अर्थात् प्रथम स्थितिः ग्रहण करो की आज्ञा पर दोनों घुटनों को बढ़ाओ दहिनी एड़ी को बाईं एड़ी के पास लाओ॥

क्रियाद्वयेन तृतीयस्थितिः

थर्ड पोजिशन् इन् टू मोशन्स्
अर्थात् दो क्रिया के द्वारा तिसरी स्थितिग्रहण करो.

एकम् वन् एक	एकम् वन् अर्थात् एक की आज्ञा पर द-क्षिण पार्श्व को सामने की ओर इस तरह घुमा-ओ कि जिस में कंधा और घुटना पाद के मध्य भाग के ऊपर बराबर होवें शरीर तनी हुई रहे ॥
हे टू दो	हे टू अर्थात् दो की आज्ञा पर झट पट साम-ने की ओर छत्तीस इंच के लग भग का कदम ल्यो घुटना अंतः पाद के ऊपर बराबर रहे बा-यां घुटना और पाद सीधे और दृढ़ रहें परिध्यें एक रेखा में होवें शरीर सीधी रहे और कंधे बांई ओर बराबर रहें ॥

द्वितीय व्यायाम क्रिया

सेकन्ड् एकस्टेन्शन् मोशन्
अर्थात् दूसरी व्यायाम क्रिया करो

एकं	एकम् वन् अर्थात् एक की आज्ञा पर बाहुओं को शरीर के सामने लाओ हाथ बंद अं-गुलिपर्व ऊपर की ओर और कोट के निचले बुटाम के नीचे परस्पर स्पर्श किये हुये रहें तब उन हाथों को क्रमशः तब तक उठाओ कि जब तक कलाईयां भीतर की ओर करने से छाती को न छुवे केहुनियां ऊपर की ओर
वन्	रहें तिसके बाद कंधों को जोर से पीछे की

एक — और दवा के हाथों को जुदा २ करो और केहु-नियों को दबाके इस क्रिया को समाप्त करो और अब बाजुओं और अंगुलियों को झट पट तिर्यग रेखा में करो दक्षिण कलाई सिर के बराबर ऊंची रहे कंधे नीचे रहें अंगुठे दक्षिनी ओर झुके रहें॥

नवीन सिपाहियों को यह क्रिया विभाग करके सिखलानी चाहिये अर्थात् इस क्रिया के प्रथम अंशके वास्ते **सजन** प्रिपेअर अर्थात् तैयार हो यह आज्ञा देनी चाहिये इस आज्ञा पर हाथों को छाती तक लाके उनको जुदा करने के वास्ते पूर्ण रूप से तैयार रहना चाहिये और जब **एकम्** वन् अर्थात् एक की आज्ञा दी दी जावे तब उस क्रिया को समाप्त करनी चाहिये॥

हे-तू-दो — **हे** तू अर्थात् दो की आज्ञा पर दहिनी टङरी को फैला के शरीर को उठाओ॥

त्रीणि थ्री तीन — **त्रीणि** थ्री अर्थात् तीन की आज्ञा पर दहिने घुटने को झुकाओ और शरीर को इस तरह बढ़ाओ कि जिस में **प्रथम क्रिया** फर्स्ट मोशन् गृहीत होवे॥

प्रथम स्थितिः फर्स्ट पोजिशन् अर्थात् प्रथम स्थिति ग्रहण करो की आज्ञा पर इस तरह उछलो कि जिसमें बाऊं पीछे हो जावें और दहिनी एड़ी बाईं एड़ी से मिलजावे कि जिस में पूर्वोक्त अनुसार **प्रथम स्थिति**

फर्स्ट पोजिशन् गृहीत होवे ॥

सम्मुखे प्रएर अर्थात् सामने हो की आज्ञा पर भट पट सावधाना:अटेन्शन् की स्थिति पर आओ और हाथ पादों को एकही क्रिया में अपनी २ उचित जगह पर लाओ ॥

पूर्वोक्त शिक्षाओं में जो स्थितियां पोजिशन्स् और गतियां मूवमेन्ट्स् भिन्न २ प्रत्येक क्रियाओं के वास्ते भिन्न २ आज्ञा वाक्यों के द्वारा वर्णित हुई हैं वे खड्ग प्रयोग की तैयारी के वास्ते कही गई हैं अब वे ही स्थितियां इस तरह से की जावें गी कि आज्ञावाक्य में केवल अपेक्षित स्थिति का नाम निर्देश किया जावे कि जिस में नवीन सिपाही लोग शरीर की डौल बिगाड़े बिना शीघ्रगति क्किटाइम् में दृढ़ता पूर्वक स्थिति परिवर्तन करने का अभ्यास सीखें उन के भेद के वास्ते आज्ञावाक्य केवल प्रथम: द्वितीय: तृतीय: फर्स्ट सेकंड थर्ड ये देनी चाहिये

स्थितियों के वर्णन के विषय में

प्रथम: फर्स्ट अर्थात् प्रथम की आज्ञा पर बाहुओं को पीछे की ओर उठाओ दहिनी एड़ी सामने रहे तिसके बाद एकबारगी प्रथम स्थिति: फर्स्ट पोजिशन् पर आओ ॥

द्वितीय: सेकन्ड अर्थात् दो इस आज्ञा पर द्वितीयस्थिति: सेकंड पोजिशन् पर आओ ॥

तृतीय: थर्ड अर्थात् तीन की आज्ञा पर तृतीयस्थिति: थर्ड पोजिशन् पर आओ ॥

प्रथम: फर्स्ट अर्थात् प्रथम की आज्ञा पर प्रथम स्थिति: फर्स्ट पोजिशन्स् पर आओ ॥

द्वितीय: सेकन्ड अर्थात् द्वितीय की आज्ञा पर द्वितीयस्थिति: सेकन्ड पोजिशन् पर आओ ॥

तृतीयः थर्ड अर्थात् तीन की आज्ञा पर तृतीयस्थितिः थर्ड पोजिशनस् पर आओ ॥

द्वितीयः सेकन्ड अर्थात् द्वितीय की आज्ञा पर द्वितीयस्थितिः सेकन्डपोजिशनस् पर आओ ॥

एकाक्रमणम्

सिंगिल् अटैक्

अर्थात् एक वार आक्रम करो

इस आज्ञा पर दक्षिण पाद को उठाओ और झट पट भूमि पर पट को

द्विगुणाक्रमणम्

डबल् अटैक्

अर्थात् दो वार आक्रमण करो

इस आज्ञा पर दक्षिण पाद को पूर्ववत् उठाओ और दो बार भूमि पर पट को अर्थात् पहिली वार एड़ी को पट को और अब पंजे को ॥

प्रसरन

एडवान्स्

अर्थात् आगे बढ़ो

इस आज्ञा पर दक्षिण पाद को छ इंच के लग भग के बराबर आगे बढ़ाओ और झट पट भूमि पर रक्खो तिस के बाद वाम पाद को भी धीरे से उतने ही अंतर के लग भग पर लाओ ॥

एकाक्रमणम्

सिंगिल् अटैक्

अर्थात् एक वार आक्रमण करो

इस आज्ञा पर पूर्ववत् काम करना चाहिये ॥

अपक्रमन

रिटायर

अर्थात् पीछे हटो

इस आज्ञा पर वाम पाद को छ इंच के लग भग के बराबर धी-
रे से पीछे हटाओ शरीर का भार और तौल बराबर इसी पर
रहना चाहिये इस के बाद दक्षिण पाद को पीछे की ओर उ-
तने ही अंतर पर लाओ और फट पट भूमि पर रक्खो॥

द्विगुण क्रमणम्

डबल् अटैक

अर्थात् दो वार आक्रमण करो

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना चाहिये॥

सम्मुखे

फ्रण्ट

अर्थात् सामने हो

इस आज्ञा पर **सावधानाः अटेनशन्** अर्थात् सावधान-
ता की स्थिति को ग्रहण करो॥

खड्ग प्रयोग की तैयारी के निमित्त स्थिति और क्रियाओं की शि-
क्षा के एवं पूर्वोक्त विषय का प्रयोजन यह है कि जिस में अ-
वयवों के द्वारा स्वतंत्रता और चतुराई के कार्य हो सकें
क्यों कि यदि मांसपेशीय शक्ति के बल का अत्युत्तम प्रकार
से प्रयोग करने का ज्ञान होवेगा तो उन के पूर्ण आज्ञा वा-
क्य के द्वारा खड्ग प्रयोग सुगम और अधिक फलोत्पादक
होवेगा और इस के सेवाय **प्रहार कट** और **रक्षण
गार्ड** में भी उचित फल उत्पन्न कर सकेंगे और नवीन
सिपाहियों को अपनी स्थिति में **आक्रमण अटाक** और
रक्षण डिफेनस् के वास्ते बल संबंधी जो नमनीयता
अपेक्षित होती है उस नमनीयता को वे लोग सुगमता पूर्-
वक प्राप्त करने के योग्य होते हैं॥

शिक्षक को चाहिये कि स्थितियों की दृढ़ता के वास्ते प्रत्येक स्थितियों में नवीन सिपाहियों के कंधों को बराबर और दृढ़ रक्खे **द्वितीयस्थितिः सेकन्ड पोजिशन् और तोलन क्रिया** बेलन्स मोशन्स संबंधी निर्माण के परिवर्तनों में और जब **द्वितीय व्यायाम क्रिया सेकन्ड एक्सटेन्शन्मोशन्** की प्रथम स्थिति में रहते हैं तब भी दोनो हाथों से दहिनी कलाई को पकड़ के उस को बांई टङ्गी की दिशा में इस तरह लावे कि जिस में यदि दक्षिण बाहु उचित रूप से स्थापित होवे तो वह उस के बराबर होवे और प्रत्येक स्थितियों में नवीन सिपाही के शरीर को आघात देने के विना अंगुष्ठ उठाना और भूमि पर रखना भी सिखलाना चाहिये शरीर तुलित रूप से रहे और बोझ बांई टङ्गी पर रहे कि जिसमें दहिनी टङ्गी के द्वारा शत्रु के अंतर को प्राप्त कर सके अथवा उसके पहुंच से अपक्रमण कर सके **तृतीय स्थितिः थर्ड पोजिशन्** में सामने की ओर दहिनी टङ्गी करने के वास्ते निश्चित लंबाई नहीं नियत हो सकती क्यों कि यह विषय उस पुरुष की लंबाई और उस के आधीन है परंतु इतना लंबा कदम न लेना चाहिये कि जिस में उस की शीघ्रता और पूर्ण सुगमता से **प्रथम** अथवा **द्वितीयस्थितिः फर्स्ट आर सेकन्ड पोजिशन्** प्राप्त हो स के ॥

जब इस प्रकरण की शिक्षा केवल अवयवों की शिक्षा निमित्त अभ्यस्त हो चुके तब यह शिक्षा वाम कंध और वाम पाद के द्वारा सामने की ओर और इसी तरह दहिने कंधे और दहिने पाद के द्वारा सामने की ओर करना चाहिये ॥

२-दूसरा प्रकरण

खड्ग के साथ सज्ज होने की शिक्षा का वर्णन

चांदमारी के प्रयोजन और वर्णन के विषय में ॥

खड्ग के साथ वक्ष्यमाण शिक्षा चांदमारी के अनुसार होनी चाहिये और वह चांदमारी इस तरह से स्थापित होती है कि जिस में उसका केंद्र मनुष्य की छाती के बराबर उंचा रहे और चांदमारी के केंद्र के नीचे से एक रेखा भूमिपर सामने की ओर सीधी खींची जावे जिस के बाद उस चांदमारी से १-फुट के अंतर पर नवीन सिपाही को **सावधानाः अटेनशन्** की स्थिति पर कर के इस तरह से खड़ा करना चाहिये कि जिस में उसकी बांई एड़ी उस रेखा पर इस तरह से रहे कि जिस में जब वह **प्रथमस्थितिः फर्स्ट पोजिशन्** पर फिरे तब उस का दक्षिण पाद उस को आच्छादन कर लेवे इस ग्रंथ के आदि में जो गोला कार चिन्ह लगा है उस से सात **प्रहार कट और रक्षण गार्ड** मालुम होते हैं **प्रहार कट** केंद्र से किये गये हैं और रेखाओं के द्वारा पहिचाने जाते हैं और उन के नाम उस संख्या के अनुसार रक्खे गये हैं जिससे कि प्रत्येक **प्रहार कट** आरंभ होते हैं ॥

रक्षण गार्ड प्रहारों के सामने प्रवण रूप खड्ग पकड़ने से होते हैं और वे रक्षण उन चिह्नित रेखाओं के द्वारा मालुम होते हैं जिनमें कि खड्ग की मुठियां लगी हुई हैं अब अनुमान करो कि वह गोलाकार चिन्ह मनुष्य की उंचाई के लग भग पर है तो वे प्रहार और रक्षण उस चिन्ह को

निर्दिष्ट रेखाओं के अनुसार नियमित किये जावेंगे और जब तक नवीन सिपाही प्रहारों की उचित दिशा और इसी तरह फल की प्रबलता और रक्षण करने में कलाई की स्थिति को अच्छी तरह न जान लेवे तब तक इस प्रकार को छोड़ कर और किसी प्रकार से उस को न सिखलाना चाहिये ॥

वेधन पाइन्ट अर्थात् कोंच उस तरह करना चाहिये जैसा कि चांद मारी में दिखलाया गया है और इन वेधनों में से **प्रथम वेधन पाइन्ट** में कलाई प्रथम संख्याक की ओर होती है और खड्ग की धारा ऊपर दहिनी ओर होती है द्वितीय **वेधन पाइन्ट** में कलाई द्वितीय संख्याक की ओर होती है और धारा ऊपर बांई ओर होती है तृतीय **वेधन पाइन्ट** में कलाई केंद्र में उठी हुई और धारा ऊपर दहिनी ओर होती है और वेधन उस प्रकार से करना चाहिये जैसा कि वृत्त रूप चित्र के अंतपर चिह्नित है ॥

चांद मारी में चित्रों के कटी हुई रेखा ओं के द्वारा तैयारी की स्थिति यां मालुम होती हैं ॥

चांदमारी की **परीक्षाभ्यासरिव्यूपकसर्साइज़** अर्थात् अलीमा में **प्रहार कट रक्षण गार्ड** और **प्रत्याक्षेपी** की ऊंचाई के निमित्त शिक्षकों के वास्ते पथदर्शक होती है क्यों कि नवीन सिपाही को यह बात स्पष्ट रूप से समझना चाहिये कि चांद मारी के द्वारा केवल यह बात मालुम होती है कि **प्रहार कट** प्रभृति को किस तरह करना चाहिये अर्थात् यह बात ठीक २ नहीं मालुम होती कि प्रहार प्रभृति किस जगह करना चाहिये क्यों कि यह बात परस्पर आक्रमण करने वाले दलों के कार्य के आधीन है जैसा कि प्रथम तृतीय और पंचम

प्रहार कट बांई ओर शिर से ले पाद तक अनेक अवयवों पर दिये जा सकते हैं और इसी तरह द्वितीय चतुर्थ और षष्ठ प्रहार भी दहिनी ओर दिये जा सकते हैं इन दोनों पार्श्वों के प्रहारों में से प्रथ पार्श्वीय अर्थात् वामपार्श्वीय प्रहार **अंतःपार्श्वीय प्रहार** इनसाइड कट कहलाते हैं और द्वितीय अर्थात् दक्षिण पार्श्वीय प्रहार **बहिःपार्श्वीयप्रहार** औट साइड कट कहलाते हैं प्रथम तृतीय और पंचम उसके अनुकूल **अंतःपार्श्वीय रक्षण** इनसाइड गार्ड कहलाते हैं द्वितीय चतुर्थ और षष्ठ **बहिःपार्श्वीय रक्षण** औट साइड गार्ड कहलाते हैं जब चांद मारी के सम्मुख स्थित होने का विषय नवीन सिपाही के मन में अच्छी तरह बैठ जावे तब उसको चांद मारी के सम्मुख अधिक अभ्यास करने का कुछ प्रयोजन नहीं परंतु शिक्षक को यह बात विचार लेना चाहिये कि यह यथार्थ रूप से **रक्षण गार्ड** के करने में और **प्रहारकट** करने में धार की उचित दिशा देने में निश्चित परिपक्व भया कि नहीं॥

एक ही समय में अनेक नूतन भटों की शिक्षा के वास्ते आभ्यंतरीय रेखाओं के सहित इस ग्रंथ के चांद मारी के चित्र के इसकी प्रतिकृति अभ्यास की जगहों में बनानी चाहिये उनके केंद्र भूमि से चार २ फुट ऊंचे रहें और उनका व्यास चौदह इंच रहे॥

प्रहार कट रक्षण गार्ड बेधन पाइन्ट प्र-
रक्षण पेरी के वर्णन के विषय में

यह काम पहिले पेदल और चांदमारी के सम्मुख करना चाहिये ॥

जब नूतन भट तैयारी की क्रियाओं में अच्छी तरह निपुण हो

जावें तब उन को खड्ग ले के उस के प्रबल और दुर्बल भाग से परिचित होना चाहिये खड्ग का प्रबल अर्द्धभाग वह है जो कि मुठिया की ओर रहता है दुर्बल अर्द्ध भाग वह है जो कि नोक की ओर रहता है **प्रहार कट** करने अथवा रोकने के वास्ते इन भेदों का ज्ञान बहुत आवश्यक है क्यों कि ये बातें उन के उचित प्रयोग के आधीन हैं मुठिया से ऊपर की ओर शत्रु के फल को रोकने के वास्ते रक्षण बल क्रमशः घटता है क्यों कि **प्रहार कट** नोक की ओर से होता है और प्रहार करने में नोक से नीचे की ओर यह बढ़ता है खड्ग के प्रबल भाग को चाहिये कि शत्रु के शस्त्र के दुर्बल भाग को प्राप्त करे और **प्रहार कट** नोक के आठ इंच के भीतर से देना चाहिये कि जिस में खड्ग आप निकल आवे **प्रहार** कट करने में यह बात लाभ कारक होती है कि खड्ग का प्रबल भाग शत्रु के दुर्बल भाग से टक्कर खावे कि जिस में उस का रक्षण दब जावें॥

खड्ग निष्कासयत

ड्रा सोर्ड्स

अर्थात् तलवारें निकालो

इस आज्ञा पर बायें हाथ से खड्ग के मियान को ठीक २ मुठिया के नीचे पकड़ो और तद उस को कटि की उचाई के बराबर ऊंची करो तिस के बाद झट पट दहिने हस्त को शरीर के पा[illegible] लाकर मुठिया को पकड़ो और उसी समय उस को पीछे की ओर फेरदो और उस हस्त को केहुनि की उचाई के बराबर ऊंचा करो बांह शरीर से लगी रहे इस के बाद दूसरी **क्रिया मोशन्** के द्वारा हस्त के विस्तार से मियान में से खड्ग को निकालो यार पीछे की ओर रहे और तद उस हस्त को तब तक

नीचे करो कि जब तक मुठिया ठीक २ ठुड्डी के नीचे न होवे फल
लंब रूप से रहे धार बाईं ओर रहे अंगुष्ठ मुठिया के पार्श्व पर
फैला रहे केहुनी शरीर से मिली हुई रहे कि जिस में **प्रकाश्य**
त खड्गम् रिकवरसोर्ड की स्थिति प्राप्त हो जावे इस के बाद
तृतीय **क्रिया आज्ञान्** के द्वारा कलाई और केहुनी को दक्षिण
कटि के बराबर पंक्ति में लाओ केहुनी पीछे की ओर रहे और
बांह उत्तमा विस्तृत रहना चाहिये कि जिस में वह सुगमता पूर्वक
रहे हस्त खड्ग को मृदुता पूर्वक पकड़े रहे परंतु अंगुलियों को
खींच कर प्रबल रूप से पकड़ने को तज रहे और अब खड्ग
का ऊपरला पासा दक्षिण स्कंध के निम्नस्थान में होगा धार साम्ने
की ओर होगी कि जिस में **तोलयत खड्गम् केरी सोर्ड**
की स्थिति प्राप्त हो जावे ज्यों ही तलवार निकाली जाती है त्यों ही
वाम हस्त **सावधान: अटेन्शन्** की स्थिति पर आप जा
ता है खड्ग के निकासन और प्रवेशन की द्वितीय और तृतीय
क्रियाओं के वास्ते यदि **द्वे टू** अर्थात् दो और **त्रीणि थ्री** अ-
र्थात् तीन ये शब्द कहे जावें तो यह प्रकार अभ्यास के वा
स्ते उत्तम होगा ॥

वक्रं खड्गम्

स्लोप सोर्ड

अर्थात् तलवार तिर्छी करो

इस आज्ञा पर हाथ को सामने केहुनी के बराबर लाओ केहुनी श-
रीर से मिली हुई रहे खड्ग कांधे पर रहे धार सामने की ओर रहे

प्रवेशयत खड्गम्

रिटर्न सोर्ड

अर्थात् तलवार मियान में रक्खो

जावें तब उन को खड्ग ले के उस के प्रबल और दुर्बल भाग से परिचित होना चाहिये खड्ग का प्रबल अर्द्धभाग वह है जोकि मुठिया की ओर रहता है दुर्बल अर्द्ध भाग वह है जो कि नोक की ओर रहता है **प्रहार कट** करने अथवा रोकने के वास्ते इन भेदों का ज्ञान बहुत आवश्यक है क्यों कि ये बातें उन के उचित प्रयोग के आधीन हैं मुठिया से ऊपर की ओर शत्रु के फल को रोकने के वास्ते रक्षण बल क्रमशः घटता है क्यों कि **प्रहार कट** नोक की ओर से होता है और प्रहार करने में नोक से नीचे की ओर यह बढ़ता है खड्ग के प्रबल भाग को चाहिये कि शत्रु के शस्त्र के दुर्बल भाग को प्राप्त करे और **प्रहार कट** नोक के आठ इंच के भीतर से देना चाहिये कि जिस में खड्ग आप निकल आवे **प्रहार कट** करने में यह बात लाभ कारक होती है कि खड्ग का प्रबल भाग शत्रु के दुर्बल भाग से टक्कर खावे कि जिस में उस का रक्षण दब जावें ॥

खड्ग निष्कासयत

ड्रा सोर्ड्स्

अर्थात तलवारें निकालो

इस आज्ञा पर बायें हाथ से खड्ग के मियान को ठीक २ मुठिया के नीचे पकड़ो और तब उस को कटि की उचाई के बराबर ऊंची करो तिस के बाद फट पट दहिने हस्त को शरीर के पास लाकर मुठिया को पकड़ो और उसी समय उस को पीछे की ओर फेरदो और उस हस्त को केहुनि की उचाई के बराबर ऊचा करो बांह शरीर से लगी रहे इस के बाद दूसरी क्रिया मोशन् के द्वारा हस्त के विस्तार से मियान में से खड्ग को निकालो यार पीछे की ओर रहे और तब उस हस्त को तब तक

नीचे करो कि जब तक मुठिया ठीक २ ठुड्डी के नीचे न होवे फल
लंब रूप से रहे धार बाईं ओर रहे अंगुठा मुठिया के पार्श्व पर
फैला रहे केहुनी शरीर से मिली हुई रहे कि जिस में **प्रकाशय**
न खड्गम् रिकवरसोर्ड की स्थिति प्राप्त हो जावे इस के बाद
तृतीय **क्रिया मोशन्** के द्वारा कलाई और केहुनी को दक्षिण
कटि के बराबर पंक्ति में लाओ केहुनी पीछे की ओर रहे और
बांह उत्तम विस्तृत रहना चाहिये कि जिस में वह सुगमता पूर्वक
रहे हस्त खड्ग को मृदुता पूर्वक पकड़े रहे परंतु अंगुलियों को
खींच कर प्रबल रूप से पकड़ने को तज रहे और अब खड्ग
का ऊपरला पासा दक्षिण स्कंध के निम्नस्थान में होगा धार सामने
की ओर होगी कि जिस में **तोलयत खड्गम् केरीसोर्ड**
की स्थिति प्राप्त हो जावे ज्यों ही तलवार निकाली जाती है त्यों ही
वाम हस्त **सावधानः अटेन्शन्** की स्थिति पर आप जा
ता है खड्ग के निकासन और प्रवेशन की द्वितीय और तृतीय
क्रियाओं के वास्ते यदि **हे टू** अर्थात् दो और **त्रीणि थ्री** अ-
र्थात् तीन ये शब्द कहे जावें तो यह प्रकार अभ्यास के वा-
स्ते उत्तम होगा॥

वक्र खड्गम्
स्लोप सोर्ड
अर्थात् तलवार तिर्छी करो

इस आज्ञा पर हाथ को सामने केहुनी के बराबर लाओ केहुनी श-
रीर से मिली हुई रहे खड्ग कांधे पर रहे धार सामने की ओर रहे॥

प्रवेशयत खड्गम्
रिटर्न सोर्ड
अर्थात् तलवार मियान में रक्खो

इस आज्ञा पर मुठिया को वामस्कंध के निम्न स्थल पर लाओ वाम हस्त से पूर्ववत मियान को उठाओ फल लंब रूप से रहे हस्त का पृष्ठ भाग सामने की ओर रहे इस के बाद कलाई को झट पट फेर के वा नोक को मियान में रक्खो और तब धार को पीछे की ओर तब तक फेरो कि जब तक हस्त और केहुनी शरीर के बाहर एक रेखा में बराबर न होवें तिस के बाद द्वितीय क्रिया के द्वारा खड्ग को मियान में पुनः स्थापन करो हस्त मुठिया पर रहे तृतीय **क्रिया मोशन** के द्वारा हस्त **सावधानाः अटेन्** शन् की स्थिति पर पीछे लाये जाते हैं ॥

खड्गम् निष्कासयत

ड्रा सोर्ड

अर्थात् तलवार को निकालो

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना चाहिये ॥

वक्र खड्गम्

स्लोपसोर्ड

अर्थात् तलवार को तिर्छी करो

इस आज्ञा पर भी पूर्वोक्त प्रकार से काम करना चाहिये ॥

संतिष्ठत्

स्टैंड्एटईज़

अर्थात् आराम से खड़े हो ॥

इस आज्ञा पर यदि वे लोग संश्लिष्टक्रम क्लोज आर्डर में होवें तो तलवार **वक्रम् स्लोप** की जगह पर रहेगी यदि विस्तृतक्रम में होवे तो हस्त एकत्र लाये जाते हैं बांया हाथ दहिने को आच्छे रहता है तलवार का पृष्ठ भाग बांई बाहु के भितरी ओर रहता है दोनो क्रम अर्थात संश्लिष्ट और विस्तृत क्रमों में दहि

ना कदम पीछे लाया जाता है बायां घुटना नियमानुसार झुका हुआ रहता है ॥

सावधाना:

अटेन्शन्

अर्थात् सावधान हो

इस आज्ञा पर **वक्र खड्गम् स्लोप सोर्ड** की स्थिति पर लाओ ॥

खड्गाभ्यासार्थं सज्जन

प्रिपेअर फार सोर्ड एकसर्साइज

अर्थात् तलवार की कवाइद के वास्ते तैयार हो

इस आज्ञा पर शरीर और पैरों को **प्रथम स्थितिः फर्स्ट पोजिशन्** पर फेरो बायां हस्त कटि पर इस तरह से रक्खो कि जिस में अंगुष्ठ पीछे की ओर रहे ॥

द्वितीय चित्र देखो

दक्षेऽन्तरम् शोधयत

राइटइन्वर्ड प्रेसटेनस्

अर्थात् दहिनी ओर, अंतर को शुद्ध करो ॥

इस आज्ञा पर **प्रकाशांत खड्गम् रिकुवर सोर्ड** करो तर्जनी अंगुली और अंगुष्ठ मुठिआ के बराबर विस्तृत रहें अंगुष्ठ पृष्ठ भाग पर रहे मुठिआका प्रान्त तली में रहे और तब द्वितीय क्रिया के द्वारा बांह को दहिनी ओर फैलाओ और खड्ग को कंधे के बराबर समान दिशा में नीचे करो धार पीछे की ओर रहे बायां स्कंध सामने की ओर बराबर रहे ॥

इस शिक्षा में और इस के सेवाय और शिक्षाओं में भी जहां कि द्वितीय क्रिया अपेक्षित होती है वहां टू अर्थात् दो

यह शब्द तब तक अवश्य देना चाहिये कि जब किसी इशारा देने वाले मनुष्य के द्वारा अभ्यास न होवे।

वक्रम् खड्गम्

स्लोप सोर्ड

अर्थात् तलवार तिर्छी करो

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना चाहिये ॥

सम्मुखेऽन्तरशोधयत

फ्रएट यूव डिसटेनस्

अर्थात् सामने की ओर अंतर को शुद्ध करो

इस आज्ञा पर तलवार को पूर्ववत उठाओ जिस के बाद द्वितीय क्रिया के द्वारा **तृतीयस्थितिः थर्ड पोजिशन्** अर्थात् तृतीय स्थिति पर कदम बढ़ाओ बाहु को फैलाओ जिस के बाद खड्ग के प्रान्त को चांदमारी के केंद्र की ओर नीचे करो धार दहिनी ओर रहे ॥

तृतीय चित्र देखो

वक्रम् खड्गम्

स्लोप सोर्ड

अर्थात् तलवार तिर्छी करो

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना उचित है

आक्रमत

एसालट

अर्थात् आक्रमण करो

इस आज्ञा पर बाहु को सामने की ओर उठाओ कलाई प्रथम संख्या के सामने रहे केहुनी गोलाकार चित्र के केंद्र की ओर अधिक झुकी रहे खड्ग का पृष्ठ नोक के निकट कंधे पर रहे

पलटिये

एकम वन एक	**एकम् वन्** अर्थात् एक की आज्ञा पर बाड़ को फैला के जिस तरह चित्र में प्रथम संख्या से चतुर्थ संख्या की ओर दिखलाया है उसी तरह दहिनी ओर से बाईं ओर के तिर्यग दिशा में सामने की ओर **प्रहार कट** करो और ज्यों ही नोक मंडल से बाहर हो जावें त्योंही अंगुलिपर्वों को ऊपर की ओर फेर के तलवार को बराबर इस तरह लेते आओ कि जिस में उसका नोक वामे कंधे के पीछे की ओर हो कर उसी जगह पर वह ठहरे धार बाईं ओर झुकी रहे कलाई द्वितीय संख्या के सामने रहे ॥
दे टू दो	**दे-टू**-अर्थात् दो की आज्ञा पर द्वितीय संख्या से तृतीय संख्या की ओर **प्रहार कट** करो और कलाई को इस तरह फेरो कि जिस में तलवार तब तक चली जावे कि जब तक नोक दक्षिण कटि के नीचे न आवे धार नीचे की ओर रहे केहुनी भीतर की ओर झुकी रहे कलाई द्वितीय संख्याक की ओर रहे ॥
त्रीणि थ्री तीन	**त्रीणि थ्री** अर्थात् तीन की आज्ञा पर तिर्यग रूप से ऊपर की ओर तृतीय संख्या से द्वितीय संख्या की ओर **प्रहार कट** करो और कलाई को तब तक बराबर ले जाओ कि जब तक खड्ग का नोक वाम कटि के नीचे न आ जावे धार नीचे की ओर हो वे केहुनी झुकी और उठी हुई होवे कलाई प्रथम संख्याक की ओर होवे ॥

चतुर्थ फोर चार — **चत्वारि फोर** अर्थात् चार की आज्ञा पर तिर्यग रूप से ऊपर को चतुर्थ संख्या से प्रथम संख्या की ओर **प्रहार** कट करो और अंगुलिपर्वों को नीचे की ओर फेरो खड्ग की धार दहिनी ओर होवे और नोक दहिने कंधे के ऊपर पीछे को रहे केहुनी झुकी हुई और कलाई पंचम संख्या की ओर होवे॥

पंच फाइव पांच — **पंच फाइव** अर्थात् पांच की आज्ञा पर पंचम संख्या से षष्ट संख्या की ओर समान रूप से **प्रहार** कट करो और अंगुलिपर्वों को ऊपर की ओर फेरो खड्ग की धार बाईं ओर होवे नोक बायें कंधे के ऊपर पीछे की ओर होवे केहुनी झुकी हुई और कलाई षष्ट संख्या की ओर रहे॥

षट सिक्स छ — **षट सिक्स** अर्थात् छ की आज्ञा पर षष्ट संख्या (सप्तम संख्या) की ओर समान रूप से **प्रहार** कट करो और उस हस्त को सप्तम संख्या की दिशा की ओर लाओ खड्ग उसी रेखा में सिर के ऊपर रहे नोक पीछे की ओर नीचे रहे धार ऊपर की ओर रहे॥

सप्तम सेविन् सात — **सप्तम सेविन्** अर्थात् सात की आज्ञा पर सप्तम संख्या से उस मंडल के केंद्र की ओर ऊर्ध्वाधर रूप से नीचे की ओर **प्रहार** कट करो और बाहु को फैलाये हुए रहो अंगुष्ठ मुठिया के पृष्ठ भाग पर रहे और बायां कंधा पीछे की ओर अच्छी तरह दबा हुवा रहे॥

प्रथम वेधनम
फर्स्ट पाइन्ट

अर्थात् पहिला हूल मारो

इस आज्ञा पर तलवार के धार को दहिनी ओर ऊपर फेरो और कलाई को दक्षिण नेत्र के सामने ऊपर भीतर की ओर खींचो कलाई अच्छी तरह झुकी और उठी हुई होवे बांया कंधा थोडा सा आगे लाओ छाती भीतर की ओर रहे ॥

हे टू दो — **हे टू** अर्थात् दो की आज्ञा पर बाहु को फैलाओ और चांदमारी के केंद्र की दिशा में झट पट सामने की **वेथन फाइनट** करो कलाई उठी हुई और प्रथम संख्या की ओर झुकी हुई होवे बांया कंधा पीछे की ओर इस तरह दबा हुवा होवे कि जिसमें दहिना कंधा आगे की ओर बढ़ जावे क्योंकि इसी के द्वारा अधोलिखित द्वितीय और तृतीय **वेथन पाइनट** बराबर किये जाते हैं ॥

द्वितीयवेथनम्

सेकन्ड पाइन्ट

अर्थात् दूसरा हूल मारो

इस आज्ञा पर धार को बाईं ओर ऊपर फेरो और केहुनी को भीतर की ओर खींच के शरीर से लाओ कलाई इस के ऊपर इतनी ऊंची उठाओ कि जिस में छाती के बराबर सामने होवे अंगुठा मुठिआ के दहिनी ओर होवे ॥

हे टू दो — **हे टू** अर्थात् दो की आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से **वेथन पाइनट** करो कलाई उठी हुई और द्वितीय संख्या की ओर झुकी हुई होवे धार उठी हुई अंगुलियें नीचे की ओर होवें ॥

तृतीय वेधनम्

थर्ड पाइन्ट

अर्थात् तीसरा हूल मारो

इस आज्ञा पर बाहु को भीतर की ओर तब तक खींचो कि जब तक कलाई कटि के ऊपर भाग को न स्पर्श करे अंगुठा मुठिआ के बाईं ओर होवे धार उठी हुई दहिने को रहे बायां कंधा आगे को निकला हुआ और कटि पीछे को दबी हुई होवें ॥

हे-टू-दो { **वे**-टू- अर्थात् दो की आज्ञा पर चांदमारी में निर्दिष्ट दिशा की ओर **वेधन** पाइन्ट करो और कलाई को केंद्र की ओर उठाओ ॥

अवन

डिफेन्ड

अर्थात् बचाव करो

इस आज्ञा पर धार को बाईं ओर फेर के **प्रथम रक्षण फर्स्ट गार्ड** करो अंगुठा मुठिम को पकडे हुये रहे केहुनी को भीतर खींच कर शरीर से मिलाओ कलाई सामने की ओर रहे और तलवार को चिह्नित तिर्यग रेखा के सामने उस तरह रक्खो जैसा कि चांदमारी में **प्रथम रक्षण फर्स्टगार्ड** के निमित्त मुठिआ युक्त तलवार से दिखलाया गया है इस में और अग्रिम रक्षण अर्थात् जो द्वितीय तृतीय प्रभृति रक्षण गार्ड से द्योतित हैं उन में प्रान्त सामने की ओर अधिक बढा हुआ होता है बायां कंधा बाईं ओर के

रक्षणों में अच्छीतरह पीछे रहना है और दक्षिण ओर के रक्ष-णों में और इसी तरह सप्तम रक्षण सेविन्थगार्ड और अरक्षण पेरी में भी वह कंधा अधिक आगे की ओर लाया-जाता है ॥

द्वितीयम्
सेकन्ड
अर्थात् दूसरा रक्षण करो

इस आज्ञा पर कलाई को फेरो अंगुलिपर्व ऊपर की ओर रहें खड्ग की धार दहिनी ओर रहे और खड्ग को इस तरह स्थापन करो कि जिस में वह **द्वितीय रक्षण सेकन्डगार्ड** देखिए तिर्यग् रेखा प्रभृति के सामने होवे ॥

तृतीयम्
थर्ड
अर्थात् तीसरा रक्षण करो

इस आज्ञा पर कलाई को फेरो धार बांई ओर कंधे की उंचाई के लग भग के बराबर ऊंची रहे नोक दहिनी ओर नीचे रहे खड्ग की स्थिति प्रभृति **तृतीय रक्षण थर्ड गार्ड** की तरह रहे ॥

चतुर्थम्
फोर्थ
अर्थात् चौथा रक्षण करो

इस आज्ञा पर केहुनी को उठाओ कलाई और धार को दहिनी ओर फेरो नोक बांई ओर होवे खड्ग प्रभृति की स्थिति **चतुर्थ रक्षण फ़ोर्थ गार्ड** की तरह होवे ॥

पंचम

फिफथ्

अर्थात् पांचवां रक्षण करो

इस आज्ञा पर धार को बाईं ओर फेरो कलाई शरीर के सम्मुख बाईं ओर कंधे के बराबर ऊंची रहे खड्ग उस लंब रूप रेखा के सामने होवे जो कि उठिआ युक्त हो के पंचम रक्षण फिफथगार्ड द्योतन करनी है ॥

षष्ठम्

सिक्स्थ

अर्थात् छठवां रक्षण करो

इस आज्ञा पर कलाई को झुका के धार को दहिनी ओर इस तरह फेरो कि जिस में तलवार उस लंब रूप रेखा प्रभृति के सामने होवे जिस से कि षष्ठ रक्षण सिक्स्थगार्ड द्योतित होता है ॥

सप्तमम्

सेविन्थ

अर्थात् सातवां रक्षण करो

इस आज्ञा पर कलाई को ऊपर उठाओ और दक्षिण कांधके आगे करो केहुनी ऊपर और पीछे की ओर अच्छी तरह दबी हुई होवे तलवार उस तरह रहे जैसा कि सप्तम रक्षण सेविन्थ गार्ड में दिखलाया गया है ॥

अरक्षत

पेरी

अर्थात् हूल बचाओ ॥

इस आज्ञा पर कलाई को प्रायः दहिनी कंधे के साथ मिली हुये नीचे करो धार दहिनी ओर रहे कटि पीछे की ओर दबी हुई

होवे और खड्ग की अंगुलियां प्रथम संख्या के सामने रहे ॥

दो रुह कैडे — इस आज्ञा पर कलाई को इस तरह फेरो कि जिस में नो कलाई और पीछे होवे और शरीर के बांई ओर से दहिनी ओर को एक मण्डल करके अपनी प्राथमिक स्थिति को ग्रहण करो ॥

वक्रं खड्गम्

स्लोप सोर्ड्स्

अर्थात् कंधे पर तिर्छी तलवार करो

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना उचित है ॥

सातो प्रहार कट और तीनों वेधन पाइनट का वर्त्तमान प्रकार से भी अभ्यास करना चाहिये आक्रमन एसाल्ट अर्थात् आक्रमण करो की आज्ञा पर वे बिना परस्पर किसी वास्तविक अवसान के नियमित क्रम में मिलाये जाते हैं और कलाई के सामयिक और उचित परिवर्तन के द्वारा प्रहार कट परस्पर मिलाये जाते हैं प्रहार कट प्रबल रूप से देना चाहिये और आगे की ओर रहे कलाई सम्भवानुसार सामने की ओर रहे और फिरने में दूसरे प्रहार के वास्ते तैयार रहे और पीछे की ओर प्राय: उसी रेखा में खींची हुई होवें बांह थोड़ी सी झुकी हुई होवे कि जिस में कलाई स्वतंत्रता पूर्वक अपना व्यापार कर सके केहुनी और कंधा प्रहार देने के वास्ते बल देते हैं इस वास्ते इन को इस क्रिया में अत्यंत बढ़ना चाहिये जब कभी नवीन सिपाही आक्रमण करने की अवस्था में तलवार चलाने में भूल जावे तब उस को मिला के स-

भ्यास करें और उन को कई वार दोहराया करे और इसी तरह **द्वितीया टू** और **तृतीया थ्री** को और **पंचथा फाइव** और **षष्ठथा सिक्स** को भी मिला के करे परंतु इस बात में सावधानता रखनी चाहिये कि धार चांद मारी की रेखाओं के सापेक्ष होवे और कलाई प्रत्येक **प्रहार कट** के करने में केंद्र की ओर चले ॥

नवीन सिपाही को अब भी चांद मारी के सम्मुख खड़ा करा के तीनो **युद्धरक्षण** ऐंड्र गेजिङ्ग गार्ड सिखलाना चाहिये **प्रहार कट** और **रक्षण गार्ड** को सापेक्ष रूप से मिला के अभ्यास करना चाहिये कि जिस में प्रत्येक **प्रहार कट** के वास्ते उसके मन में **रक्षण गार्ड** अच्छी तरह बैठ जावे प्रहार और वेधन कलाई के द्वारा सामने की ओर बांह के पूर्ण विस्तार से किये जाते हैं

और **तृतीयस्थिति:** थर्ड पोजिशन् में प्रत्येक **प्रहार कट** मंडल के केंद्र से बढ़ के न देना चाहिये **रक्षण गार्ड** और **प्ररक्षण पेरी प्रथम स्थिति:** फर्स्ट पोजिशन् में करना चाहिये कि जिस में प्रत्येक वेधन के वास्ते तैयार रहे ॥

रक्षन
गार्ड
अर्थात् बचाओ

इस आज्ञा पर बांह को चांदमारी के केंद्र की ओर बढ़ा के खड्ग के नोक को बढ़ाओ धार नीचे की ओर रहे तिसके बाद विराम के बिना शरीर को झुका के छाती और गले को

हङ्गन
गार्ड
अर्थात बचाओ
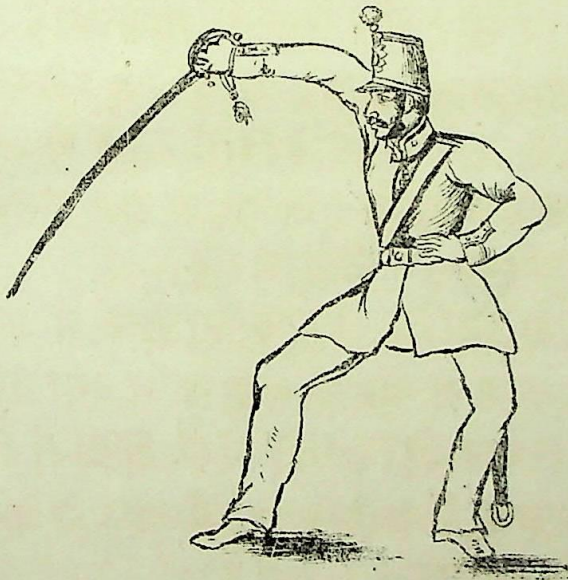
अंतःरक्षन
इन्साइड् गार्ड
अर्थात भीतर बचाओ

बहिःरक्षन
ऑट् साइड् गार्ड
अर्थात् बाहर बचाओ

भीतर की ओर खींचो और बायें कंधे को किंचित आगे की
ओर लाओ और झट पट कदम बढ़ा के **द्वितीय स्थिति**
सेकन्ड पोजिशन् पर आओ केहुनी झुकी और उठी हु-
ई इस तरह होवे कि जिसमें वह हस्त प्रायः दक्षिण पादके
ऊपर होवे और खड्ग की धारा ऊपर की ओर फिरी हुई हो
वे नोक नीचे रहे और बांई ओर झुकी हुई होवे खड्ग औ
र बांह के द्वारा जो कोण बना हुआ है उस में से चांदमारी
स्पष्ट रूप से देख पड़ती रहे मुठिया प्रथम संख्या की ओ
र झुकी होवे नोक चतुर्थ संख्या के बांई ओर नीचे रहे॥

अंतः रक्षण
इनसाइडगार्ड
अर्थात भितरी ओर बचाओ

इस आज्ञा पर कलाई को नीचे करके सिर और शरीर को
उठाओ अंगुलि पर्व नीचे और पाद के ऊपर रहे खड्ग की
नोक सामने रहे धार बांई ओर रहे हस्त कलाई के बरा-
बर नीचे परंतु थोड़ा ऊपर और कटि के सामने रहे और
इसी समय **एकाक्रमणम् सिंगिल्अटैक्** अर्थात
एकाक्रमण करो इसमें कलाई चतुर्थ संख्या की ओर और
नोक प्रथम संख्या की ओर झुकती है॥

बहिः रक्षण
औटसाइडगार्ड
अर्थात बाहरी ओर बचाओ

इस आज्ञा पर अंगुलिपर्वों को ऊपर करके कलाई को

फेरो खड्ग की धारा दहिनी ओर रहे और फिर **एकाक्रमणम्** **सिंगिल् अटाक्** करो इसमें हस्त तृतीय संख्या की ओर नोक द्वितीय संख्या की ओर झुकी रहे ॥

एकधा प्रहरत **कट वन्** अर्थात् एकवार करो	इस आज्ञा पर एकवार काटो और **तृतीय स्थितिः थर्ड पोजिशन्** पर आओ ॥
प्रथम रक्षणम् **फर्स्ट गार्ड** अर्थात् पहिला रक्षणकरो	इस आज्ञा पर प्रथम रक्षण करो और **प्रथम स्थिति फर्स्ट पोजिशन्** पर आओ ॥
द्विधा प्रहरत **कट टू** अर्थात् दूसरी वारकाटो	इस आज्ञा पर दूसरी वार काटो और **तृतीय स्थितिः थर्ड पोजिशन्** पर आओ ॥
द्वितीय रक्षणम् **सेकन्ड गार्ड** अर्थात् दूसरा रक्षणकरो	इस आज्ञा पर द्वितीय रक्षण करो और **प्रथम स्थितिः फर्स्ट** पोजिशन् पर आओ ॥
त्रिधा प्रहरत् **कट थ्री** अर्थात् तीसरी वार काटो	इस आज्ञा पर तीसरी वार काटो और **तृतीय स्थितिः थर्ड पोजिशन्** पर आओ ॥
तृतीय रक्षणम् **थर्ड गार्ड** अर्थात् तीसरा रक्षणकरो	इस आज्ञा पर तीसरा रक्षण करो और **प्रथम स्थितिः फर्स्ट पोजिन्** पर आओ ॥
चतुर्धा प्रहरत **कट फोर** अर्थात् चौथीवार काटो	इस आज्ञा पर चौथी वार काटो और **तृतीय स्थितिः फर्स्ट फोजिशन्** पर आओ ॥

चतुर्थ रक्षणम् फोर्थ गार्ड अर्थात् चौथा रक्षण करो	इस आज्ञा पर चौथा रक्षण करो और **प्रथम स्थितिः** फर्स्ट् पोजिशान् पर आओ॥
पंचधा प्रहरत कट फाइव अर्थात् पांचई वार काटो	इस आज्ञा पर पांचई वार काटो और **तृतीय स्थितिः** थर्ड पोजिशान् पर आओ॥
पंचम रक्षणम् फिफथ् गार्ड अर्थात् पांचवां रक्षण करो	इस आज्ञा पर पांचवां रक्षण करो और **प्रथम स्थितिः** फर्स्ट् पोजिशान् पर आओ॥
षड्धा प्रहरत कट सिक्स अर्थात् छटई वार काटो	इस आज्ञा पर छटई वार काटो और **तृतीय स्थितिः** थर्ड पोजिशान् पर आओ॥
षष्ठ रक्षणम् सिक्सथ् गार्ड अर्थात् छठवां रक्षण करो	इस आज्ञा पर छठवां रक्षण करो और **प्रथम स्थितिः** फर्सट पोशिन् पर आओ॥
सप्तधा प्रहरत कट सेविन् अर्थात् सातवीं वार काटो	इस आज्ञा पर सातवीं वार काटो और **तृतीय स्थिति** थर्ड पोजिशन् पर आओ॥
सप्तम रक्षणम् सेविन्थ् गार्ड अर्थात् सातवां रक्षण करो	इस आज्ञा पर सातवां रक्षण करो और **प्रथम स्थितिः** फर्स्ट् पोजिशान् पर आओ॥
प्रथम वेधनम् फर्स्ट् पाइन्ट अर्थात् पहिली हूल मारो	इस आज्ञा पर **प्रथम स्थितिः** फर्स्ट पोजिशान् में होके **प्रथम वेधने** फर्स्टपाइन्ट के वास्ते तैयार हो॥

हे टू दो	इस आज्ञा पर प्रथम वेथनम् फर्सट पाइनूट अर्थात् प्रथम हूलमारो और तृतीय स्थिति थर्ड पोजिशन् पर आओ ॥
द्वितीय वेथनम् सेकनूड पाइनूट अर्थात् दूसरी हूल मारो	इस आज्ञा पर प्रथम स्थिति: फर्सट पोजिशन् में हो के द्वितीय वेथन सेकनूड पाइनूट अर्थात् दूसरे हूल के वास्ते तैयार हो ॥
हे हू दो	इस आज्ञा पर द्वितीय वेथनम् सेकनूड पाइनूट अर्थात् दूसरा हूल मारो और तृतीय स्थिति थर्ड पोजिशन् पर आओ ॥
तृतीय वेथनम् थर्ड पाइनूट अर्थात् तीसरी हूल मारो	इस आज्ञा पर प्रथम स्थिति फर्सट पोजिशन् में हो के तृतीय वेथन थर्ड पाइनूट अर्थात् तीसरे हूल के वास्ते तैयार हो ॥
हे हू दो	इस आज्ञा पर तृतीय वेथन थर्ड पाइनूट अर्थात् तीसरी हूल मारो और तृतीय स्थिति थर्ड पोजिशन् पर आओ ॥
प्रत्न पेरी अर्थात् हूल बचाओ	इस आज्ञा पर प्रथम स्थिति फर्सट पोजिशन् में हो के प्रत्नाए पेरी अर्थात् हूल बचाने के वास्ते तैयार हो ॥

द्रे-टू- दो **रक्षन-गार्ड** अर्थात् वचाओ	इस आज्ञा पर **प्रत्याघात करो** अर्थात् हूल वचाओ ॥
	इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना चाहिये ॥
वर्क स्वॉर्ड **स्लोप स्वोर्ड** तलवार तिर्छी करो	इस आज्ञा पर भी पूर्वोक्त प्रकार से काम करना चाहिये ॥

यहां तक केवल शिक्षाही समझना चाहिये और नवीन सिपाही को इस का यथार्थ क्रम स्मरण रखना कुछ आवश्यक नहीं और जब यह बात निश्चित हो जावे कि वह सिपाही इस विषय को समझता है और यथार्थ रूप से करभी सकता है तब उस को अधोलिखित प्रकरण का परीक्षाभ्यास करने की शिक्षा देनी चाहिये ॥

३-तीसरा प्रकरण

परीक्षाभ्यास रिव्यू अर्थात् असीमा की कवाइद का वर्णन

वक्ष्यमाण शिक्षा उसी प्रकार से की जाती है जिस तरह कवाइद का अंतिम भाग किया जाता है केवल भेद इतना ही है कि **प्रहार कट** के बाद द्वितीय आज्ञा वाक्य की प्रतीक्षा विना उस के सापेक्ष रक्षण किया जाता है और आक्रमण की प्रत्येक क्रिया के बाद उछल के सापेक्ष रक्षण की स्थिति पर आते हैं ॥

गार्ड
अर्थात् बचाओ
इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना चाहिये

अंतः रक्षण

इन्साइड गार्ड
अर्थात् भीतरी ओर बचाओ
इस आज्ञा पर भी पूर्वोक्त प्रकार से काम करना उचित है

बहिः रक्षण

आउटसाइड गार्ड
अर्थात् बाहर की ओर बचाओ
इस आज्ञा पर भी पूर्वोक्त प्रकार से काम करो

एकम वन् अर्थात् एक की आज्ञा पर एकधा प्रहार करो और **प्रथमरक्षण** फर्स्टगार्ड पर आओ प्रहार पूर्वोक्त प्रकार से **तृतीयस्थितिः** थर्ड पोजिशन् में करो और रक्षण गार्ड करने में उछल कर **प्रथमस्थितिः** फर्स्ट पोजिशन् पर आओ और इसी तरह संपूर्ण प्रहार कट और रक्षण गार्ड में करना उचित है **वेधन** पाइन्ट अर्थात् हूल मारने और **प्ररक्षण** पेरी अर्थात् हूल बचाने में भी करना चाहिये॥

द्वे-टू-अर्थात् दो की आज्ञा पर **द्विधाप्रहरन** कट टू करो और द्वितीय रक्षण सेकन्डगार्ड पर आओ॥

त्रीणि-थ्री-अर्थात् तीन की आज्ञा पर त्रिधा प्रहरन कट थ्री करो और तृतीय रक्षण थर्डगार्ड पर आओ॥

चत्वारि-फोर् अर्थात् चार की आज्ञा पर चतुर्धा प्रहरन कट फोर करो और चतुर्थ रक्षण फोर्थ गार्ड पर आओ॥

पंच फाइव् अर्थात् पांच की आज्ञा पर पंचधा प्रहरन करो॥

और **पंचम रक्षण** फिफ्थगार्ड पर आओ॥

षट् सिक्स अर्थात् छ की आज्ञा पर **षष्ठा प्रहरन** करो और **षष्ठ रक्षण** सिक्स्थगार्ड पर आओ॥

सप्त सेविन् अर्थात् सात की आज्ञा पर **सप्तथाप्रहरन** कट सेविन् करो और **सप्तम रक्षण** सेविन्थगार्ड पर आओ॥

वेधनानि पाइन्टस् अर्थात् हूल मारो की आज्ञा पर **प्रथम वेधनम्** फर्स्ट पाइन्ट के वास्ते तैयार हो॥

प्रथम फर्स्ट अर्थात् पहिली हूल मारो की आज्ञा पर प्रथम वेधन करो और **द्वितीय वेधनम्** सेकंडपाइन्ट के वास्ते तैयार हो॥

द्वितीय सेकंड अर्थात् दूसरी हूल मारो की आज्ञा पर द्वितीय वेधन करो और **तृतीय वेधनम्** पाइन्ट के वास्ते तैयार हो॥

तृतीयम् थर्ड अर्थात् तीसरी हूल मारो की आज्ञा पर तृतीय वेधन करो और **अरक्षण** पेरी के वास्ते तैयार हो॥

अरक्षन पेरी अर्थात् हूल बचाने की आज्ञा पर पूर्ववत् काम करो॥

रक्षन गार्ड अर्थात् बचाओ की आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना उचित है॥

वकेरवड्डम् स्लोप सोर्ड अर्थात् कांधे पर तिर्छी तलवार करो इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना उचित है॥

यद्यपि **प्रहार** कट और **रक्षण** गार्ड एक से ले सात तक नियमित क्रम से हैं पर तो भी नवीन सिपाही को चाहिये कि शिक्षक की आज्ञानुसार उन के परिवर्तन करने का अभ्यास करें क्यों कि

इस से नवीन सिपाही बचाने वाली स्थिति को अत्यंत सजता और शी-
घ्रता पूर्वक ग्रहण करने के योग्य होता है अथवा अपने आक्रमण
की गति को भिन्न रूप करने के योग्य होता है इस काम के वास्ते
खड्गाभ्यास: सोर्डप्रेकटिस अर्थात् तलवार का अ-
भ्यास करो यह सूचना दी जाती है और **रक्षण गार्ड** से प्रारंभ
हो ताहै भितरी और बाहरी प्रहार एक से छ तक किये जाते
हैं परंतु प्रत्येक प्रहार से रक्षण की स्थिति पर आजाना चाहिये
और इसी तरह बाहरी प्रहार आभ्यंतरीय रक्षण से किये जाते हैं
और आभ्यंतरीय प्रहार बाहरी रक्षण से किये जाते हैं अथवा ज-
ब कोई एकही प्रहार और उसका सापेक्ष रक्षण अपेक्षित होता
है तब संख्या दी जाती है और **परीक्षाभ्यास रिव्यूएकसरसाइज़**
की तरह किया जाता है परंतु जब **प्रहार कट** टउ.री के वास्ते कि
या जाता है अर्थात् **तिथा थ्री** और **चतुर्था फोर** का प्रहार हो
ता है तब संख्या देने के पूर्व **तबार्थम् फार दी लेग** अर्थात्
टउ.री के वास्ते यह सूचना अवश्य देनी चाहिये और उसी के अ-
नुसार नीचे की रक्षण भी करना उचित है ॥

४— चौथा प्रकरण

आक्रमण अटैक् और रक्षण डिफेनस् कर-
ने के विषय में ॥

जब नवीन सिपाही **प्रहार कट** और उन के सापेक्ष **रक्ष**
ण गार्ड करने में पूर्ण रूप से शिक्षित हो जावें तब उन को
चाहिये कि उन क्रियाओं को अधो लिखित दो प्रकार अभ्यासानु-

सार अभ्यास करें अहार कट और बेयन पाइन्ट तृतीयस्थिति थर्ड पोजिशन् में करना चाहिये रक्षण गार्ड और प्रहार पेरी प्रथम स्थिति फर्स्ट पोजिशन् में करना उचित है॥

अब गुल्म स्क्वाड् अर्थात टोली दो चार अथवा अधिक श्रेणियों में बनाई जावेगी और वर्क्स स्वर्ड्स् स्लोप सोर्ड्स् अर्थात कंधे पर तिर्छी तलवार करके शिक्षक की दृष्टि के सामने खड़ी होंगी इन टोली और बुगलों के बीच में चार कदम का अंतर रहना चाहिये जब इस तरह का निर्माण हो चुके तब द्वितीय और तृतीय प्रकरणों की संपूर्ण कवाइद को भिन्न२ आज्ञा वाक्यों के द्वारा अथवा सूचक मनुष्य के द्वारा करना चाहिये इन दोनों प्रकारों में से प्रथम प्रकार उत्तम उपाय है क्योंकि इसमें खड्ग वाला मनुष्य जिस दिशा की ओर कार्य करने को चाहता है उस दिशा की ओर अपनी दृष्टि रखने के योग्य होता है॥

सम्मुखः श्रेणिः दक्षतः पृष्ठपार्श्वे
फ्रन्टरांक राइट अबोट फेस ∴∵

अर्थात् सामने की टोली दहिनी ओर से पीछे की ओर मुख करो

इस आज्ञा पर वे बुगल दहिनी ओर से पीछे की ओर मुख करते हैं

आक्रमणार्थं रक्षणार्थंच-सज्जत
प्रिपेअर फार अटाक ऐंड डिफेन्स्

अर्थात् आक्रमण और रक्षण करने के वास्ते तैयार हो॥

इस आज्ञा पर बुगल प्रथम स्थिति फर्स्ट पोजिशन् पर हो के परस्पर अवरोध करते हैं॥

अंतर शोधयत

क्लोज़डिसटेन्स

अर्थात् अंतर को शुद्ध करो

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से युगल अंतर को शुद्ध करते हैं परंतु प्रथमस्थितिः फर्स्ट्पोजिशन् में ही रहते हैं॥ इस बात में अत्यंत सावधानता रखनी चाहिये कि आमने सामने के युगलों में उचित अंतर रहे कि जिस में प्रत्येक तलवार के नोक से दूसरे का कबजा छू जावे कटि पीछे की ओर अवलंबित रह दबी रहे सम्मुखश्रेणी अपनी तलवारों को ऊपर रखती है पृष्ठश्रेणी राह देती है अथवा अपेक्षित परिमाण के अनुसार आगे बढ़ती है इसी वास्ते जब तक संपूर्ण लोग अपने २ उचित अंतर पर दृढ़ता पूर्वक नहीं खड़े होते तब तक शिक्षक **वक्रखड्गम्** स्लोप्सोर्डस् यह आज्ञा नहीं देता॥

वक्र खड्गम्

स्लोप सोर्डस्

अर्थात् कांधे पर तलवार को तिर्छी करो

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना चाहिये

रक्षत

गार्ड

अर्थात् बचाओ

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से करना उचित है॥

अंतः रक्षत

इनसाइडगार्ड

अर्थात् भीतर की ओर बचाओ

यह काम एकाक्रमण सिंगिलूस्टाक से होता है और वे युगल मिलती रक्षण पर प्रवृत्त होते हैं तलवारें नोक से आठ इंच के लग भग पर मिल जाती हैं ॥

बहिः रक्षत

ओटसाइडगार्ड

अर्थात् बाहरी ओर बचाओ

एकाक्रमण सिंगिलूस्टाक् से बहिः रक्षण पर परिवर्तित हो तलवार प्रभृति पूर्ववत रहे ॥

वाम कपोलम्

लेफट चीक्

अर्थात् वाम कपोल पर करो ॥

सम्मुखश्रेणि

फ्रएट रांक

अर्थात् सामने की कतार

का काम

पूर्वोक्त आज्ञा पर

एकधा प्रहरत

कट वन्

अर्थात् एक बार काटेगी

पृष्ठश्रेणि

रिअररांक

अर्थात् पिछली कतार

का काम

पूर्वोक्त आज्ञा पर

प्रथम रक्षण

फर्स्ट गार्ड

अर्थात् प्रथम रक्षण

करेगी ॥

दक्षकपोलं

राइट चीक

अर्थात् दहिने कपोल पर करो

इस आज्ञा पर
द्वितीय रक्षणम्
सेकंड गार्ड
अर्थात् द्वितीय रक्षण करेगी

इस आज्ञा पर
द्विधा प्रहरन
कट टू
अर्थात् दूसरी बार काटेगी

मणिबंधम्
रैसट
अर्थात् कलाई पर करो

इस आज्ञा पर
त्रिधा प्रहरन
कट थ्री
अर्थात् तीसरी बार काटेगी

इस आज्ञा पर
तृतीय रक्षणम्
थर्ड गार्ड
अर्थात् तृतीय रक्षण करेगी

जंघा
लेग
अर्थात् टङरी पर करो

इस आज्ञा पर
चतुर्थ रक्षणम्
फोर्थ गार्ड
अर्थात् चतुर्थ रक्षण करेगी

इस आज्ञा पर
चतुर्धा प्रहरन
कट फोर
अर्थात् चौथी बार काटेगी

वामपार्श्वम्
लेफ्ट साइड
अर्थात् बायें पासे पर करो

इस आज्ञा पर
पंचवा प्रहरन
कट फाइव
अर्थात् पांचवईं वार काटेगी

इस आज्ञा पर
पंचम रक्षणम्
फिफ्थ् गार्ड
अर्थात् पंचम रक्षण करेगी

दक्षपार्श्वम्
राइट साइड
अर्थात् दहिने पासे पर करो

इस आज्ञा पर
षष्ठ रक्षणम्
सिक्स्थ गार्ड
अर्थात् छठवां रक्षण करेगी

इस आज्ञा पर
छठ्वा प्रहरन
कट सिक्स
अर्थात् छठईं वार काटेगी

शीर्षम्
हेड
अर्थात् सिर पर करो

इस आज्ञा पर
सप्तमा प्रहरन
कट सेविन्
अर्थात् सातवीं वार काटेगी

इस आज्ञा पर
सप्तम रक्षणम्
सेविन्थ गार्ड
अर्थात् सातवां रक्षण करेगी

प्रथम बेधनं
फर्स्ट पाइन्ट

अर्थात् प्रथम हूल मारो

इस आज्ञा पर
प्ररक्षण
पेरी
अर्थात् हूल बचा देगी
और तृतीय-
वेधन थर्ड पाइन्ट
के वास्ते तैयार होगी

इस आज्ञा पर
प्रथम वेधन
फर्स्ट पाइन्ट
अर्थात् पहिली हूल
मारेगी
और **प्ररक्षण** पेरी
अर्थात् हूल बचाने के वा
स्ते तैयार होगी॥

तृतीय वेधनं
थर्ड पाइन्ट
अर्थात् तीसरा हूल मारो

इस आज्ञा पर
तृतीय वेधन
थर्ड पाइन्ट
अर्थात् तीसरा हूल मारेगी
और **प्ररक्षण** पेरी
अर्थात्
हूल बचाने के वास्ते तैयार
होगी

इस आज्ञा पर
अरक्षण
पेरी
अर्थात् हू
ल बचावेगी और **तृती**
वेधन थर्ड पाइन्ट
के वास्ते तैयार होगी

रक्षन
गार्ड
अर्थात् बचाओ

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना उचित है ॥

वक्रं खड्गम्

स्लोप् सोर्ड्स्

अर्थात् तलवार को कांधे पर तिर्छी करो

इस आज्ञा पर भी पूर्वोक्त प्रकार से काम करना चाहिये ॥

पूर्वोक्त प्रत्येक **वेधन पाइन्ट** अर्थात् हूल मारने की आज्ञा मिल ने पर बचाने वाले युगल को चाहिये कि उछल कर **प्रथम स्थिति फर्सट पोजिशन्** अर्थात् पहिली डोल ग्रहण करे और आक्रम ण करने वाला युगल आक्रमण के निमित्त **दे-टू** अर्थात् दो के शब्द की प्रतीक्षा करे परंतु **दाडाभ्यास स्टिक प्रेकटिस्** अ र्थात् लकड़ी की कवाइद में **वेधन पाइन्ट** अर्थात् हूल एक बार दिया जाता है ॥

इस अभ्यास में आक्रमण और रक्षण की गतियों का भ्रमण उसी त रह होता है जैसा कि **परीक्षाभ्यास रिव्यूएकसरसाइज़** अ र्थात् असीमा की कवाइद में होता है और वे गतियां **प्रहार कट** और **रक्षण गार्ड** के प्रयोग को दिखलाती हैं और दोनों को परंतु तिन में से विशेष करके प्रहारों को यथार्थ रूप से उसी तरह क रना चाहिये कि जिस तरह चांदमारी पर करते हैं अर्थात् एक त लवार दूसरी तलवार के ऊपर न पड़ने पावे परंतु कलाई खूब ऊ पर रहे और अपेक्षित गति को फिर प्रारंभ से करने को तैयार रहे और इस बात में अत्यंत सावधानता रखनी चाहिये कि हूरी शुद्ध होने के बाद जब तक दूसरी आज्ञा न मिले तब तक वे यु गल अपने बाम पांव को न हटावें **सम्मुख श्रेणी फ्रन्टराक**

अवर्तनीय रूप से आरंभ करती है परंतु दोनों को समान अभ्यास करना चाहिये इस अभ्यास में **द्वितीय वेधन** सेकंडपाइन्ट छोड दिया जाता है क्यों कि **प्ररक्षण** पेरी अर्थात् हूल बचानाही शत्रु को वे शस्त्र कर देता है॥

यथोलिखित अभ्यास से आक्रमण करने रक्षण करने और फट फट फिर **वेधन** पाइन्ट करने की शिक्षा का अभ्यास होता है और प्रवृत्त दलों की योग्यतानुसार शीघ्रता पूर्वक क्रमिक आज्ञाओं के द्वारा आठ अथवा दस बार करना चाहिये यह अभ्यास संगीन और भाला के सम्मुख भी रक्षण के वास्ते अत्यन्त उपकारक होता है॥

वेधन पाइन्ट अर्थात् हूल मारने और प्ररक्षण पेरी अर्थात् हूल बचाने के विषय में

रक्षत

गार्ड

अर्थात् बचाओ

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना उचित है

सम्मुख श्रेणी	**पृष्ठ श्रेणी**
फ्राण्ट रांक	रियर रांक
सामने की कतार	पिछली कतार

तृतीय वेधनम्

थर्ड पाइन्ट

अर्थात् तीसरी हूल मारो

इस आज्ञा पर	इस आज्ञा पर

तृतीयवेथन
थर्ड पाइन्ट
अर्थात् तीसरी हूल मारने
के वास्ते तैयार होगी

प्रदक्षण
पेरी
अर्थात् हूल बचाने के
वास्ते तैयार होगी ॥

विध्यन
पाइन्ट
अर्थात् हूल मारो

इस आज्ञा पर बांई टउ-री बढ़ा के शरीर को आगे बढ़ावेगी और तृतीयवेथन थर्ड पाइन्ट अर्थात् तीसरा हूल मारेगी और जब प्रदक्षण पेरी अर्थात् बचाना होगा तब बांह को पीछे खींचे गी और प्रदक्षण पेरी के वास्ते तैयार होवेगी ॥

इस आज्ञा पर प्रदक्षण पेरी अर्थात् हूल बचावेगी और तृतीयवेथन थर्ड पाइन्ट अर्थात् तीसरा हूल के वास्ते तैयार होगी।

विध्यत
पाइन्ट
अर्थात् हूल मारो

इस आज्ञा पर दहिनी
ह.इ.ी को ऊरू बक्षा
के शरीर को पीछे
खींचेगी और प्रव
क्षा देगी प्रभृति
करेगी ॥

इस आज्ञा पर दूसरी
य वेयन पाइंट
इनूट अर्थात् गीस-
री हल प्रभृति करे
गी ॥

रक्षण

गार्ड

अर्थात् बचाओ

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना उचित है

वर्क स्वड्रमू

स्लोप सोर्ड

अर्थात् तलवार को कांधे पर तिर्छी करो

इस आज्ञा पर भी पूर्वोक्त प्रकार से काम करना चाहिये

सब लोगों से समान अभ्यास कराना चाहिये परंतु इस बात की सूचना देनी चाहिये कि कौन श्रेणी प्रारंभ करेगी और सम्मुख **श्रेणी** फ्राण्ट रैंक को जब तक दूसरी आज्ञा न मिले तब तक पूर्वोक्त प्रकार से काम करना चाहिये गुल्म कभी २ इस काम के वास्ते एकही श्रेणी में रचित होते हैं और प्रत्येक स्थिति में संपूर्ण **रक्षण गार्ड** और **वेधन** पाइन्ट सिखलाये जाते हैं विशेष करके प्रथम स्थिति में और **वेधन** पाइन्ट करने में **प्रथम स्थिति** फर्सट् पोजिशनस्

से **तृतीय स्थिति** थर्ड पोजिशन् में और **द्वितीय स्थिति** सेकन्ड पोजिशन् से **तृतीय स्थिति** थर्ड पोजिशन् में बारंबार परिवर्तन करना उचित है॥

५-पांचवां प्रकरण

दण्ड स्टिक अर्थात् लकड़ी की शिक्षा के विषय में

उक्त शिथिल अथवा स्वतन्त्र अभ्यास प्रकार के बिना **खड्गाभ्यास** **लोईएक्सरसाइज़** अर्थात् तलवार की कवाइद उचित रूप से नहीं आसकती इस वास्ते जिस तरह पटे बाजी की विद्या को प्राप्त करने के वास्ते पटे व्यवहृत होते हैं उसी तरह इस काम के वास्ते भी तलवार की जगह दण्ड अर्थात् लकडी का व्यवहार करना चाहिये परंतु यथादृश अभ्यास आरम्भ होने के पूर्व अधोलिखित **आक्रमण** अटाक और **रक्षण** **डिफेन्स** के वास्ते पंच मेलन को अच्छी तरह अभ्यस्त और सीख लेना उचित है वह दण्ड चालीस इंच के लगभग के बराबर लंबा होना चाहिये परंतु इतना पतला न होवे कि जिस में लचक आवे चमडे के कबजे केवल उतने ही व

ड़े रहें कि जिस में हस्त को आच्छादन करें न कि उस को बंद कर लेवें और इस कपट हस्त को कभी न छोड़ना चाहिये क्यों कि उस से प्रहार कट और हूल मारने के अभ्यास में वे लोग निश्चित रूप से करने के योग्य होते हैं यही निर्माण आक्रमण अटाक रक्षण डिफेन्स और हूरी शोधन में भी सतत रखना चाहिये और प्राथमिक दोनों अभ्यास उसी तरह से करना चाहिये कि जैसा तलवार के साथ चतुर्थ प्रकरण में लिखा है तृतीयाभ्यास में प्रहार कट तृतीय स्थिति सेटऊ-री पर किये जाते हैं और जो कि सिर और गले पर किये जाते हैं सो लाघव और सावधानता पूर्वक प्रथम स्थिति से किये जाते हैं क्यों कि दोनों प्रहार कट एकही समय पर किये जाते हैं और वह युगल जो कि टऊ-री पर प्रहार करता है उस को आत्म रक्षण के वास्ते शक्ति नहीं रहती परंतु जब उचित अंतर पर से वार लगे तब टऊरी के हटा लेने से फल दिखलाना चाहिये चतुर्थ और पंचम अभ्यासों में **आक्रमण अटाक** नियमानुसार तृतीय स्थिति से और **रक्षण** डिफेन्स अर्थात् बचाव प्रथम स्थिति से करना उचित है॥

प्रथमाभ्यासः

फर्स्ट प्रेकटिस

अर्थात् पहिला अभ्यास करो

रक्षन

गार्ड

अर्थात् बचाओ

इस आज्ञा पर वे ही आज्ञा शब्द और गतियें सतत की जाती हैं जो कि चतुर्थ प्रकरण में आक्रमण और रक्षण के वास्ते लिखी गई हैं॥

तृतीयाभ्यासः

थर्ड प्रेकटिकल

अर्थात् तीसरा अभ्यास करो

सम्मुख श्रेणी	पृष्ठ श्रेणी
फ्रण्ट रांक	रियर रांक
अर्थात् सामने की कतार	अर्थात् पिछली कतार

रक्षत

गार्ड

अर्थात् बचाओ

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना चाहिये

जंघा

लेग

अर्थात् टङ्गी पर करो

इस आज्ञा से टङ्गी पर चतुर्थ प्रहार करोगी	इस आज्ञा से सिर पर अथवा प्रहार करोगी-

अन्तः रक्षत

इन् साइड गार्ड

अर्थात् भीतर की ओर बचाओ

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना उचित है

जंघा

लेग

अर्थात् टउ़ी पर करो

टउ़ी पर इस आज्ञा से षष्ठथा प्रहार करेगी

इस आज्ञा से गले पर षष्ठथा प्रहार करेगी-

बहिः रक्षत

ओटसाइड गार्ड

अर्थात् बाहर की ओर बचाओ

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना चाहिये

जंघा

लेग

अर्थात् टउ़ी पर करो

इस आज्ञा से टउ़ी पर पंचथा प्रहार करेगी

इस आज्ञा से गले पर पंचथा प्रहार करेगी-

रक्षत

गार्ड

अर्थात् बचाओ

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना उचित है

वक्र खड्ग

स्लोप सोर्डस

अर्थात् कांधे पर तिर्छी तलवार करो

इस आज्ञा पर भी पूर्वोक्त प्रकार से काम करना चाहिये

चतुर्थोभ्यासः

फोर्थ प्रेकटिस्

अर्थात् चौथा अभ्यास करो

रक्षत

गार्ड

अर्थात् बचाओ

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना उचित है

शीर्षम्

हेड

अर्थात् सिर पर करो

इस आज्ञा पर सव्यथा प्रहार करेगी

इस आज्ञा पर सव्यम रक्षण करेगी-

शीर्षं

हेड

अर्थात् शिर पर करो

इस आज्ञा पर सव्यम रक्षण करेगी

इस आज्ञा पर सव्यथा प्रहार करेगी

जंघा

लेग

अर्थात् टङ्-री पर करो

इस आज्ञा पर चतुर्था प्रहार करेगी

इस आज्ञा पर सप्तम रक्षण करेगी

जंघाम्

लेग

अर्थात् टांगों पर करो

इस आज्ञा पर सप्तम रक्षण करेगी

इस आज्ञा चतुर्था प्रहार करेगी

शीर्षम्

हेड

अर्थात् सिर पर करो

इस आज्ञा पर सप्तथा प्रहार करेगी

इस आज्ञा पर सप्तम रक्षण करेगी

शीर्षम्

हेड

अर्थात् सिर पर करो

इस आज्ञा पर सप्तम रक्षण करेगी

इस आज्ञा पर सप्तथा प्रहार करेगी

रक्षन

गार्ड

अर्थात् सर्व तन बचाओ

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम काम करना चाहिये

वकैरखड्गम्

स्लोप् सोर्डस्

अर्थात् कांधे पर तिर्छी तलवार करो

इस आज्ञा पर इस की क्रिया पूर्वोक्त प्रकार से करना उचित है

पंचमाभ्यासः

फिफ्थ प्रेकटिस्

अर्थात् पांचवां अभ्यास करो

रक्षत

गार्ड

अर्थात् बचाओ ॥

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना चाहिये

शीर्षम्

हेड्

अर्थात् सिर पर करो

इस आज्ञा पर समथा प्रहार करेगी

इस आज्ञा पर समम रक्षण करेगी

शीर्षम्

हेड

अर्थात् सिर पर करो

इस आज्ञा पर सम्म रक्षण करेगी

इस आज्ञा पर सम्था प्रहार करेगी

वाह्मम्

आर्म

अर्थात् वांह पर करो

इस आज्ञा पर द्विथा प्रहार करेगी

इस आज्ञा पर द्विमी प रक्षण करेगी

शीर्षम्

हेड

अर्थात् सिर पर करो

इस आज्ञा पर सम्म रक्षण करेगी

इस आज्ञा पर सम्था प्रहार करेगी

शीर्षम्

हेड

अर्थात् सिर पर करो

इस आज्ञा पर सम्था प्रहार करेगी

इस आज्ञा पर सम्म रक्षण करेगी

वाह्मम्

आर्म

अर्थात् सिर पर करो

इस आज्ञा पर द्वितीय रक्षण करेगी

इस आज्ञा पर द्विथा प्रहार करेगी—

शीर्षम्
हेड
अर्थात् सिर पर करो

इस आज्ञा पर सम्था प्रहार करेगी — इस आज्ञा पर सप्तम रक्षण करेगी ॥

शीर्षम्
हेड
अर्थात् सिर करो

इस आज्ञा पर सप्तम रक्षण करेगी — इस आज्ञा पर सम्था प्रहार करेगी ॥

दक्षपार्श्वम्
राइट साइड
अर्थात् दहिने पार्श्व पर करो

इस आज्ञा पर सम्था प्रहार करेगी — इस आज्ञा पर सप्तम रक्षण करेगी

शीर्षम्
हेड
अर्थात् सिर पर करो

इस आज्ञा पर सप्तम रक्षण करेगी — इस आज्ञा पर सम्था प्रहार करेगी

शीर्षम्
हेड

अर्थात् सिर पर करो

इस आज्ञा पर सप्तथा प्रहार करेगी

इस आज्ञा पर सप्तम रक्षण करेगी

दक्षपार्श्वम्

राइट साइड

अर्थात् दहिने पार्श्व पर करो

इस आज्ञा पर षष्ठ रक्षण करेगी

इस आज्ञा पर षष्ठ या प्रहार करेगी

रक्षत

गार्ड

अर्थात् बचाओ

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से काम करना चाहिये

वक्रस्कन्धम्

स्लोप सोर्डस्

अर्थात् कांधे पर तिर्छी तलवार करो

इस आज्ञा पर भी पूर्वोक्त प्रकार से काम करना उचित है इस बात में विशेष ध्यान रखना चाहिये कि आक्रमण करने में जिस दिशा की ओर प्रहार कट किया जाता है उस दिशा की रेखा को कलाई संभवानुसार बचावे और रक्षण की प्रत्येक स्थिति को भी क्यों कि उस से न्यून होने से केवल यथेष्ट रक्षण किया जाता है और इस बात में भी सावधान ता रखनी चाहिये कि कलाई केहुनी और कंधे मडु

और ढीले रहें कि जिस में **प्रहार कट वेयन पाइन्ट** अथवा **आक्रमण अटाक** अथवा **रक्षण डिफेन्स** की किसी क्रिया को करने के योग्य होवें ॥

लकड़ी के साथ शिक्षा में यह अच्छा अभ्यास है कि **आक्रमण अटाक** और **रक्षण डिफेन्स** की प्रत्येक क्रिया प्रथमतः दो गति में की जाती है लकड़ी के द्वारा धीरे से उस भाग को स्पर्श करना चाहिये जिसका निर्देश भया है रक्षण केवल हेटू अर्थात् दो कहने पर किया जाता है इस तरह करने से शिक्षक इस बात के देखने के योग्य होता है कि आक्रमण करने वाले युगल अपना २ प्रहार और कोंच ठीक २ और नियमानुसार करते हैं अथवा नहीं और वे युगल जो कि रक्षण करने वाले हैं सो दृढ़ और यथार्थ स्थिति में आते हैं अथवा नहीं और इस बात के विचार करने में उस को अधिक सहायता प्राप्त होती है कि शस्त्रों को परस्पर किस जगह पार होना चाहिये ॥

पूर्व प्रकरण के अनुसार क्रिया होगी परंतु संपूर्ण विपरीत होगा अर्थात् सम्मुख श्रेणी की जगह पृष्ठ श्रेणी से प्रारंभ हो और जब संपूर्ण अभ्यासों में आज्ञा वाक्य के द्वारा पूर्ण हो जावें तब उन को शीघ्र गति में करना चाहिये और शिक्षक यथोलिखित सूचना देने के पूर्व अपेक्षित अभ्यास के नाम का निर्देश करता है सूचना यह है **अभ्यसनीयांशेभ्यः दण्डाभ्यासः स्किल्ड् बाइ प्रेकटिस डिविजन्स** अर्थात् अभ्यसनीय अंशों के द्वारा दण्डाभ्यास करो ॥

वेथन पाइन्ट सामान्यतः अत्यंत फलदायक होने के कारण कभी २ प्रहार कट की जगह व्यवहित होता है और जब कभी आक्रमण में अथवा बचाने वाले रक्षण गार्ड से कट पर फिरने में इस के करने का अवसर पड़ता है तब किया जाता है **प्रथम वेथन फर्स्ट पाइन्ट** द्वितीय पंचम और सप्तम रक्षणों से- अत्यंत शीघ्रता पूर्वक किया जाता है **द्वितीय वेथन सेकंड पाइन्ट** प्रथम और तृतीय रक्षणों से किया जाता है तृतीय वेथन थर्ड पाइन्ट चतुर्थ और षष्ट रक्षणों से किया जाता है और इस प्रकार से जो वेथन किया जाता है सो उसी रक्षण गार्ड से बचाया जाता है जो कि प्रहार कट के सामने किया जाता है और बांह को तुरंत फैला के उसी क्षण हूल मारा जा सकता है कि जिस क्षण **वेथन पाइन्ट** - दिशा के उचित रेखा में होवे ॥

मिथ्याक्रमण फेन्ट अर्ध प्रहार अथवा हूल मारना है और यह बात तब होती है जब कि एक पार्श्व में थम की दिखला के दूसरे पार्श्व पर आक्रमण करने की इच्छा होवे और जब शत्रु मिथ्या क्रमण करे तब यथार्थ प्रहार और वेथन करना चाहिये।

जब पूर्वोक्त शिक्षा में अच्छी तरह पूर्ण और परिपक्व होजावें तब उचित नियम के अनुसार खड्ग के साथ एकाकी युद्ध के सदृश युगलों के द्वारा परस्पर आक्रमण करते हुये स्वतंत्र अभ्यास करना चाहिये और इन प्रहार और हूलों को अपने विचार के अनुसार करना उचित है परंतु अधोलिखित नियमों पर विशेष ध्यान रखना चाहिये क्यों कि येही उनके पथदर्शक हैं ॥

लकड़ी के साथ खड्गाभ्यास के वास्ते नियमों का वर्णन -

प्रहार कट और वेधन प्रसद् अत्यंत प्रबल रूप से न करना चाहिये अथवा इस तरह से भी न करना चाहिये कि जिस में क्रोध अथवा कोप उत्पन्न होवे ॥

प्रत्येक प्रहार और वेधन जिस शत्रु पर किया जावे उसको चाहिये कि इस को इस तरह से लेवे कि उस लकड़ी को बायें हाथ से निकल जाने देवें और तुरंत ही आप दाव वाले रक्षण पर फिर चला आवे ॥

यदि युद्ध उचित अंतर की अपेक्षा अधिक अंतर पर से प्रारंभ भया हो तो दोनों दलों को चाहिये कि सूचना के द्वारा उचित अंतर पर आ जावें कि जिस में अकस्मात किसी पर आक्रमण न होवे ॥

दो प्रहार अथवा वेधन एकही स्थल पर न करना चाहिये अथवा यदि शत्रु उसी समय इन में से कोई करे तो ऐसी अवस्था में तृतीयस्थिति से जो प्रहार कट किया जावेगा सो फलोत्पादक समझा जावेगा ॥

किसी प्रहार अथवा वेधन से फिरना न चाहिये क्यों कि ऐसा करने से वह रक्षा युक्त होता है ॥

संपूर्ण प्रहार रक्षणीय स्थिति में करना उचित है और ज्यों ही प्रहार अथवा वेधन हो चुके त्योंही उस से रक्षण की स्थिति पर आने के लिये बड़ी सावधानता रखनी चाहिये ॥

छद्मभेष के बिना कभी अभ्यास न करना चाहिये जैसा कि खड्ग की जगह लकड़ी का प्रयोग भया है और उस लकड़ी के उस भाग से जो कि धार के सदृश है यदि प्रहार

कर किया जावे तो वह उत्तम और फलदायक समझा जाता है और जो लकड़ी प्रबल न होवे उस से खड्गों के साथ युद्ध में आक्रमण अथवा रक्षण की कोई क्रिया न करनी चाहिये।

६–छठवां प्रकरण

सामान्य नियम और शिक्षा के विषय में

खड्गाभ्यास में सात प्रहार अथवा धारा की दिशा हैं और इतने ही संख्यात्मक रक्षण अथवा बचाने वाली स्थिति है वेधन अथवा कोंच नखों को ऊपर अथवा नीचे करके किया जाता है और धार की गति मण्डल रूप से होती है जिसको कि प्ररक्षण पेरी कहते हैं और इसी वास्ते जो कोई आक्रमण अटाक अथवा रक्षण उपेक्षित किये जाते हैं वे केवल पूर्वोक्त गतियों में ही से किसी पृथक आश्रयण में किये जाते हैं अथवा उन के योग से किये जाते हैं॥

खेंचा खेंची में जो कि आक्रमण के पूर्व शत्रु के साथ खड्गों के मिलाने का सामान्य कार्य है उस में धार पर थोड़ा बल देना चाहिये कि जिस में हस्त अथवा कलाई किसी क्रिया के करने में अत्यंत नमनीय होवें यद्यपि रक्षण आभ्यंतरीय रक्षण अथवा बाहरी रक्षण भी समय पर कभी २ बचाव करते हैं पर तोभी वे आक्रमणीय अथवा रक्षणीय गतियों की केवल तैयारी समझे जाते हैं आक्रमण के योग्य वेधनों के अनुसार अंतिम विषय भिन्न होती हैं॥

संपूर्ण आक्रमणों में चाहे प्रहार कट होवे अथवा वेधन थ्रस्ट होवे पर गति बल के अनुसार बढ़नी चाहिये अंत में अधिक बल लगाना उचित है और यही नियम द्वितीय सेकन्ड अर्थात

दूसरी और तृतीय थर्ड अर्थात् तीसरी स्थिति पोजिशन् में लंबा कद म लेने में भी नुकसान होता है परंतु इन स्थितियों से फिर आने में विपरीत ध्यान रखना चाहिये अर्थात् इस क्रिया करने में पहिले जलदी करनी चाहिये और इस विषय में शत्रु पर दृष्टि रखने के सेवाय और कोई बात अधिक उपकारक नहीं है पर तो भी शत्रु की कलाई की गति पर ध्यान रखना उचित है और शत्रु के जिस अंग पर तुम प्रहार अथवा चोट देने को चाहते हो उस जगह को कनखी से देखा करो पर इस बात में सावधानता रखनी चाहिये कि अपनी तलवार पर कभी न दृष्टि जाने पावें क्यों कि जिस जगह तुम प्रहार किया चाहते हो उसी जगह वह बराबर पहुंचे गी॥

यद्यपि संख्या के अनुसार प्रत्येक प्रहार कट के वास्ते प्रत्येक **रक्षण गार्ड** हैं पर तौभी रक्षण करने वाले पुरुष को सर्वदा उसी का अनुसरण करना कुछ आवश्यक नहीं है क्यों कि सिपाही लोग दूसरे **रक्षण गार्ड** के द्वारा अपने को अंत शीघ्रता और सफलता पूर्वक वार वार बचाने को योग्य हो ये हैं जैसा यदि कोई वह प्रहार कट सिक्स अर्थात् छट वां काट शरीर पर करे और उस का शत्रु वह रक्षण सिक्सथगार्ड अर्थात् छठवें रक्षण के द्वारा बचके प्रथम प्रहार कट वन अर्थात् पहिला वार छाती पर करे तो उस अवस्था में पंचम रक्षण फिफथगार्ड अर्थात् पांचवां बचाव रक्षण की शीघ्रतम किया है परंतु यदि शत्रु द्वितीय रक्षण सेकन्डगार्ड के द्वारा पहिले बच के तब प्रथम प्रहार कट वन करे तो इस अवस्था में प्रथम रक्षण फर्सट गार्ड कट पट हो सकता है इसी वास्ते प्रथम फर्सट अर्थात् पहिला और पंचम फिफथ अर्थात्

पांचवां रक्षण जिस किसी जगह से अर्थात् नीची या ऊंची से वे दि ये जावे पर ये प्रत्येक प्रथम और पंचम प्रहारों को बचा सकते हैं द्वितीय और षष्ट रक्षण ये प्रत्येक प्रथम और षष्ठ प्रहारों को बचा सकते हैं और यदि तृतीय अथवा चतुर्थ रक्षण गाई टउ-री की रक्षा के वास्ते अपेक्षित होवें तो बांह को ऐसा विस्तृत करो कि जिस में फलका प्रबल भाग शत्रु के शस्त्र के दुर्बल भाग से संसक्त होवे परंतु यह बात अच्छी तरह मन में र-खना चाहिये कि जब उचित अंतर पर हैं तब टउ-री के सं एण प्रहार में अपनी निज टउरी को उछाल के उसी समय प्रहार करो तो रक्षण अत्यंत फलदायक और उपकारक हो ता है विशेष करके कोई लंबा आदमी जब किसी छोटे कद के मनुष्य के साथ उद्युक्त होता है अथवा एक हाथ के अंतर पर से उद्युक्त होता है तब वह लंबे आदमी के पास उसका शत्रु नहीं पहुंच सकता पर वह लंबा आदमी उस छोटे आदमी के पास पहुंच सकता है ॥

रक्षण की विद्या अपनी निज स्थिति के बल पर उतनी आ-श्रित नहीं है कि जितनी जिस दिशा की ओर अपना शत्रु रोकने की उपाय कम रखता हो उस दिशा की ओर नि-श्चित रूप से फट पट कदम लेने पर आश्रित है यह बा-त विशेष कर के वेधन पाइन्ट अर्थात् हूल मारने के बचा-व के वास्ते होती है अर्थात् प्रथम और तृतीय वेधन पाइन्ट अर्थात् हूल के रोकने के वास्ते प्रथम तृतीय और पंचम र-क्षण अत्यंत फलोत्पादक हैं इसी तरह द्वितीय वेधन के वा-स्ते द्वितीय चतुर्थ और षष्ठ रक्षण लाभ कारक हैं परंतु इस बात के वास्ते खलाड़ी पहिले ही से ऐसी स्थिति पर रहे कि

जिस में अपेक्षित रक्षण शीघ्रता पूर्वक बन सके द्वितीय पंचम और सप्तम रक्षणों से फिर के अत्यन्त शीघ्रता पूर्वक **प्रथम वेधन फर्स्ट पाइन्ट** अर्थात् पहिली हूल मारी जा सकती है प्रथम और तृतीय रक्षणों से **द्वितीय वेधन सेकन्ड पाइन्ट** दिया जाता है चतुर्थ और पंचम रक्षणों से **तृतीयवेधन थर्ड पाइन्ट** मारा जाता है॥

यदि छोटे खड्ग के साथ अवरोध होवे तो तृतीय और चतुर्थ प्रहार कट करना चाहिये और उन प्रहारों को बारंबार करने से प्रहार कट के फलोत्पादक होने में प्रत्येक प्रकार की संभावना है क्यों कि धार के भ्रमण में वह सर्वदा आजाता है और शत्रु के यथेष्टरूपसे बढ़ करके कुमारे हाथ के पास पहुंच कर वेधन करने के पूर्व किये जाने हैं यदि पूर्वोक्त प्रहार कट शीघ्रता पूर्वक सतत रूप से दिये जावें तो ये छोटे खड्ग के सामने बढ़ने में सर्वदा लाभ कारक होते हैं क्यों कि उन से आक्रमण अटाक और रक्षण डिफेन्स एकही समय में हो सकते हैं परन्तु यदि शत्रु अत्यंत चतुर और अपनी गति में अत्यंत शीघ्र होवे तो प्रहार कट करते २ उचित अंतर का ध्यान रख के सावधानता पूर्वक पीछे हटो कि जिस में प्रत्येक प्रहार ठीक २ उसके बांह के अग्र भाग पर पहुंचे॥

द्वितीय वेधन सेकन्ड पाइन्ट अर्थात् दूसरा हूल यदि प्रथम क्रिया के सदृश किया जावे तो इस वेधन के करने में अत्यंत सावधानता रखनी चाहिये क्यों कि

इस क्रिया में कलाई बे शान्त होने के योग्य स्थिति में रहती है इस स्थिति का अनुसरण विशेष करके फिरने में रखना चाहिये अथवा भितरी या बाहरी रक्षणों से किसी मिथ्याक्रमण के बाद रखना चाहिये यदि बहिः रक्षण से होवे तो मिथ्या तृतीय वेधन थर्डपाइन्ट नीचे की ओर और बांह के ऊपर द्वितीय वेधन सिकन्डपाइन्ट मारो यदि अन्तः रक्षण इन् साइड गार्ड से होवे तो मिथ्या द्वितीय प्रहार करो और तलवार को बराबर तब तक लिये जावे कि जब तक उसका अग्र भाग विराम के बिना बांह के नीचे शरीर पर द्वितीय वेधन सेकन्ड पाइन्ट देने के वास्ते यथेष्ट रूप से नीचे न हो जावे ॥

तलवार के अंदाजे के भीतर भी प्रहार कट का अभ्यास करना चाहिये परंतु यदि कोई शत्रु अपने आक्रमण करने में पार्श्व की ओर रक्षण करने में कट पर कलाई को फेर के अच्छी तरह से अवरोध नहीं कर सकता तो बाहरी रक्षणों से अंतः प्रहार किये जाते हैं और अंतः रक्षणों से बाहरी प्रहार किये जाते हैं द्वितीय और चतुर्थ रक्षणों के बाद दो अग्रिम प्रहार कट अत्यंत फलदायक होते हैं अर्थात् द्वितीय रक्षण से गले पर पंचम प्रहार और चतुर्थ से टङ्गी पर प्रहार करना चाहिये खैंच वाला प्रहार लिखित प्रकार के अनुसार करना चाहिये हूलवाला प्रहार फलके धार को फलके दुर्बल भाग से ले प्रबल भाग तक जोर से आगे की ओर दबाने से होता है और यह प्रहार तब किया जाता है जब कि शत्रु इस के वास्ते खुला हुआ है अथवा शत्रु के दुर्बल अवरोध के बाद किया जाता है ॥

दिग् रेखा सामान्य अर्थ में पाद शरीर और बाहु के उस स्थिति को जनाती है जो कि **रक्षण गार्ड** के उचित स्थिति पर एक रूप से एक सरल रेखा में होती है कभी २ यह **रक्षण गार्ड** **अरक्षण** पेरी और वेधन में बांह और खड्ग के अग्रभाग की ओर होती है यदि तुम अपने रक्षणों को बहुत विस्तृत करो गे तो तुम दिग् रेखा से भूले हुये कहे जाव गे और इसी वास्ते तुम को अपने शरीर का कुछ अथवा खुला हुआ अरक्षित रखना पड़ेगा और यदि तुम अपने को रक्षित करने बिना और शत्रु के फल को रोकने बिना किसी शत्रू पर हूल मारो गे तो भी तुम दिग् रेखा से भूले हुये कहे जाव गे और जब अपने शत्रु के शरीर पर दृढ़ता पूर्वक वेधन नहीं करते जब तुम दिग् रेखा से अत्यन्त भूले हुवे कहे जाव गे॥

लङ्ग्न **लन** उस कार्य को कहते हैं कि जिस कार्य के द्वारा दिग् रेखा पर अपने फलांग के पूर्ण विस्तार से किसी शत्रु के शरीर पर **प्रहार** **कट** अथवा **वेधन** करने के वास्ते पहुंच सकते हैं॥

फिरना वह कार्य है कि जिसके द्वारा अपने शत्रु पर फलांग मार करके काम करने के बाद **रक्षण** गार्ड की स्थिति २ हीन होती है शीघ्रता और सुगमता पूर्वक फिर के रक्षण करना यह बात अपने निज रक्षा के वास्ते अत्यंत उपकारक है।

यदि संगीन अथवा भाले के साथ मुकाबला होवे तो इन शस्त्रों की लंबाई के द्वारा तुम्हारा शत्रु तुम को इतनी दूर रख सकता है कि जहां से तुम उस के पास नहीं पहुंच सकते और तुम उस के पहुंच में हो इस वास्ते तुमको उसके वर्हिन कलाई पर आक्रमण करने के वास्ते प्रयत्न करना चाहिये अथ

वा **थरवूण पेरी** अथवा **चतुर्थ रच्छण** फोर्थगार्ड के द्वारा उसके शस्त्र को हटा के उस के पास पहुंचने के वास्ते प्रयत्न करो परंतु पंचम रच्छण फिफथगार्ड अधिक फलदायक होता है क्यों कि वह उस को रोकने के वास्ते अथवा अपने खड्ग को खुला ले जाने के वास्ते जो कि उसके हाथ से बाहर फेंका जाता है कम् शक्ति रखता है अथवा उस शस्त्र को तुम अपने वाम हस्त से पकड़ो और वह यदि दहिनी ओर हटाया जावेगा तो कठिनता से पकड़ा जायगा क्यों कि तुमरा रच्छण सर्वदा दहिनी ओर की अपेक्षा बाईं ओर अधिक फलदायक होता है परंतु यदि वह उसको दोनों हस्तों से फेरे तो उसको दहिनी ओर उठादेना अति सुगम होता है और यदि तुम उस को बाईं ओर दबाओ तो अवरोध करने अथवा आपखुले हो जाने के वास्ते कम् शक्ति रखता है इस के सेवाय तुमको तब अधिक फल यह है कि उसको वाम हस्त से पकड सकते हो पर दहिनी ओर इतने सुगमता से नहीं पकड सकते थे -

अश्वारोही शत्रु पर जब आक्रमण करते हो तब तुम को उसके बाईं ओर आक्रमण करने का प्रयत्न करना चाहिये क्यों कि उस पार्श्व में वह स्वयं अथवा अपने घोडे को बचाने के वास्ते अल्प शक्ति रखता है और जितनी दूर दहिनी ओर आक्रमण कर सकता है उतनी दूर बाईं ओर नहीं घोडे पर आक्रमण करने में भी तुम उसको अवश्य कर सकते हो और यद्यपि उस की रक्षा वस्तुतः सवार के आधीन है पर तोभी वह उसके आधीन कम रहेगा यह फल तुमको सर्वदा स्मरण रखना चाहिये कि एक ही क्षण में तुम उस के पहुंच के भीतर और बाहर होने की शक्ति रखते हो तब घोडे की गतियां इसको

के वास्ते अत्यंत मंद और दुखदाई हो जाती है तब यदि पैदल खङ्गीय मनुष्य उचित ढिठाई रखता होवे तो अपने सवार शत्रु पर निश्चित रूप से फल उठा सकता है -

यद्यपि खङ्ग के निष्कासन के वास्ते नियत प्रकार लिखा है पर तोभी कभी २ एक बारगी रक्षण गार्ड पर आने का भी अभ्यास करना चाहिये और यदि कोई काम अपेक्षित होवे तो उसके परेट संबंधी कर्तव्य क्रिया प्रभृति के बिना किये करना चाहिये क्यों कि इसके द्वारा खङ्ग संबंधी पुरुष को किसी शत्रु पर आकस्मिक आक्रमण करने की सज्जता होती है॥

जो पुरुष अभ्यास संबंधी अनुभव रखते हैं उनको ऐसा स्थल प्रायः आन पड़ता है शिक्षकों को चाहिये कि शिक्षा में प्रायः संभवानुसार नवीन सिपाही के मन में उन विषयों को सामयिक नियमों के द्वारा बैठावे कि ये विषय अत्यंत उपयोगी होती हैं इन विषयों के वर्णन का समय बहुधा तब होता है जब कि सिपाही लोग आरंभ करते हैं क्यों कि गुल्म स्क्वाड को किसी स्थिति अथवा गतियों में बहुत काल तक न खड़ा करना चाहिये और जब कुछ नवीन सिपाही औरों से शिक्षा में बहुत न्यून होवें तो उस अवस्था में और सिपाहियों को खड़ा करा देना चाहिये और उन लोगों को जो कि भूलते हैं शुद्ध करना उचित है॥

७-सातवां प्रकरण

अध्यक्षों की सलामी के वर्णन में +

अध्यक्षों को चाहिये कि एक दूसरे से चार कदम के अंतर प
र पंक्ति में रचित होवें और **स्तैण्डत्त हांड पर्ट ईज़** अ
र्थात आराम की स्थिति से खड़े होवें अर्थात खड्ग का अग्र
भाग भूमी की ओर दोनों पादों के बीच में धार दहिनी ओर औ
र बां हस्त दहिने हस्त को आच्छादित किये हुवे रहे ॥

सावधानः

अटेन् शन्

अर्थात सावधान हो

इस आज्ञा पर पूर्वोक्त प्रकार से **नोलयत खड्ग** के
री सोर्डस् करें ॥

एकश्रेण्यंतरम्

रिअर् रांक टेक ओपिन् आर्डर

अर्थात पिछिली श्रेणी खुलो

इस आज्ञा पर **एकाश्रयत खड्गम् रिकवर सो-
र्डस्** करें और बाईं को अगाडी की ओर तिर्यग रूप से एक
कदम लेके दूसरे युगल के सामने जावें कि जिस में प्रथम
युगल का अग्रभाग खाली हो जावे

व्रजत

मार्च

अर्थात चलो

इस आज्ञा पर सामने की ओर तीन कदम बढ़ो और तलवा
र को **तिर्यग् पोर्ट** की स्थिति पर लाओ धार तिर्यग रूप

अध्यक्षों की सलामी
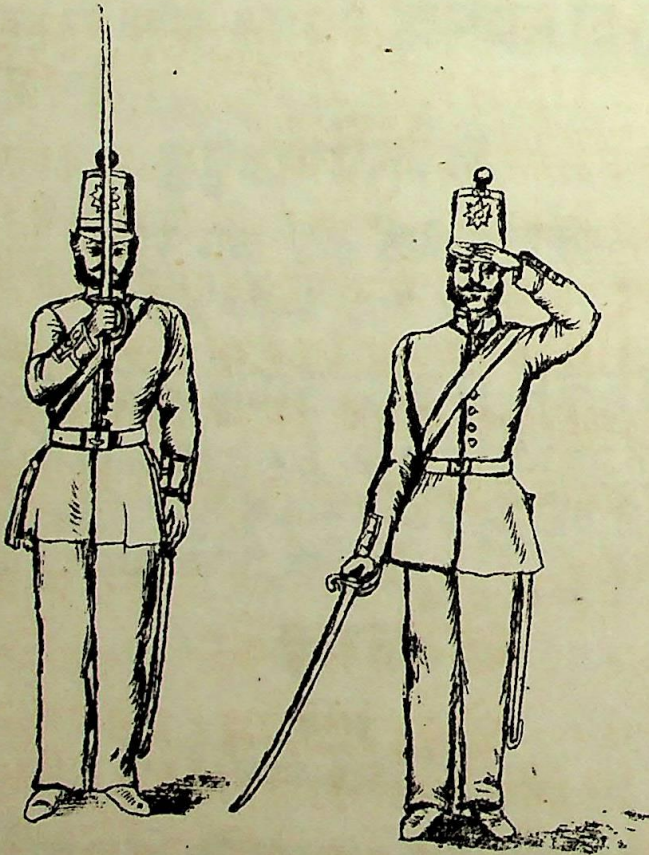
से शरीर के आर पार रहे प्रांत ऊपर की ओर रहे और बाद विल्हन प्राय: रहे बाईं किऊनी ऊकी हुई हो हाथ इतना ऊंचा होवे कि जिस में मोड़े के सामने रहे धार अंगुष्ठ और तर्जनी अंगुली के बीच में पकड़ी हुई रहे अंगुलि पर्व सा मे ओरे केऊनियां पार्श्व से मिली हुई रहें ॥

नमोरपंथेग

प्रेजेण्ट आर्म्स

अर्थात् बंदूक से सलामी करो

इस आज्ञा पर रफल के द्वितीय क्रिया के द्वारा तलवार से प्रकाशयत्नखड्गम् रिकवर सोर्ड्स की स्थिति पर लाओ और [illegible] तलवार की बांह को पूरी विस्तार द्वारा दहिनी ओर नीचे फिरो नोक बाईं ओर और दक्षिण पाद की दिशा में ऊंची हुई रहे केऊनी पार्श्व पर मिली हुई रहे तिस के बाद उसी समय वाम हस्त को सीधा माथे के सामने उठा के चक्र रूप गति के द्वारा हस्त को साफे के अग्रभाग पर लाओ अंगुलि पर्व ऊपर की ओर और अंगुलियां खुली हुई रहें ॥

स्कंधेरयंत्रम्

शोल्डर आर्मस्

अर्थात् बंदूक को कांधे पर करो

इस आज्ञा पर रफल के प्रथम क्रिया के द्वारा तलवार को प्रकाशयत्नखड्गम् रिकवर सोर्ड्स की स्थिति प

र लाओ तिस के बाद द्वितीय क्रिया के द्वारा तिर्यग् पोर्ट पर लाओ ॥

पृष्ठश्रेणी योगः
रिअर रांक टेक क्लोज़ आर्डर्
अर्थात पिछली श्रेणी खुलो

इस आज्ञा पर **दक्ष पार्श्व** राइट फेस होवें परंतु दहिना कदम ज्यों ही पीछे लावें त्यों ही **प्रकाशयन खड्गम्** **रिकवर् सोर्डस्** करें ॥

व्रजन
मार्च
अर्थात चलो

इस आज्ञा पर पीछे हट के **सम्मुख श्रेणी** फ्रण्ट रांक मिले और **सम्मुख** फ्रण्ट हो के **नोलयनखड्गम्** केरी सोर्डस् करें ॥

चलते समय सलामी तब आरंभ करना चाहिये जबकि दृष्टा अध्यक्ष से दस कदम पर रहें और वह अध्यक्ष जो कि दहिनी ओर रहता है सलामी प्रारंभ करने के दो कदम पूर्वही वाम हस्त की अंगुलियों को उठा कर और अध्यक्षों को इशारा करता है इसके बाद हस्त को दहिनी ओर फैला के तलवार को उठाते हैं और हस्त के मण्डल रूप गति के द्वारा खड्ग को प्रकाशयन की स्थिति पर

र लाते हैं और जिस के बाद उस हस्त को दहिने कंधे के पास लाते हैं उस जगह से वह नीचे की जाती है इसके बाद वाम हस्त को क्रमशः उठा के पूर्वोक्त प्रकार से साफे के अग्रभाग पर लाओ सलामी छ कदम में समाप्त होती है और वाम पाद से प्रारंभ होती है कवाइद के अभ्यास के वास्ते यह काम वक्ष्यमाण प्रकार से विभक्त होता है अर्थात् पहिले कदम में खड्ग दहिनी ओर उठाया जाता है दूसरे में **प्रकाशायन** रिकवर पर लाया जाता है तीसरे में दहिने कंधे के बराबर किया जाता है चौथे में खड्ग दहिनी ओर नीचे किया जाता है पांचवें में वाम हस्त उठाया जाता है और छठवें में साफे के अंत पर लाया जाता है ॥

जब द्रष्टा अध्यक्ष के पास पहुंचते हैं तब अपने सिर को थोडा सा उसकी ओर झुकावें और छ कदम में यह काम कर के पूर्ववत् इशारा पाने पर एक कदम में **प्रकाशायन** रिकवर और दूसरे में तिर्यग पोर्ट करें ॥

चलते समय अथवा अभ्यास में तलवार हस्त के पूर्ण विस्तार तक करनी चाहिये मुठिये की ताड़ी अंगुलियों के भितरी ओर रहे धार का पृष्ठ भाग कंधे के निम्नस्थान पर रहे ॥

शुभमस्तु